चौधरी रणबीर सिंह

जीवन, कर्तृत्व, व्यक्तित्व

कुछ अनछुए पहलू

लेखक

चौ. सुलतान सिंह

पूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा

चौधरी रणबीर सिंह

चौ.रणबीरसिंह :जीवन ,कृर्तत्व ,व्यक्तित्व

चौधरी रणबीर सिंह

जीवन, कर्तृत्व, व्यक्तित्व

कुछ अनछुए पहलु

लेखक

चौ. सुलतान सिंह

पूर्वराज्यपाल,त्रिपुरा

चौ. रणबीर सिंह पीठ

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय

रोहतक

©चौ. सुलतान सिंह । 2009

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पुस्तक का कोई भी अंश लेखक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी तरह से इस्तेमाल में नहीं लाया जा सकता है।

प्रकाशक :
चौ. रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानंद विश्व विद्यालय
रोहतक

मुद्रक :
विकास कम्प्यूटर्स एवं प्रिंटर्स,
शहादरा, दिल्ली

चौधरी रणबीर सिंह जी

कीबड़ीपुत्र-वधु

श्रीमती प्रेम लता

केलिए

जिन्होंनेअपनेआदर्शकर्तृत्वसे

अपनेघर-परिवारको,

बड़ोंकेआशीर्वादऔर

छोटोंकेसहयोगसे,

सुख,शांतिऔरसुसंस्कारों

सेनिहालकररखाहै

स्वराजसुराजकेबिनाबेमानीहै।

–

सत्तासुखकेलिएनहीं,सेवाकेलिएहासिलकीजाएतभीबरकत होतीहै।

–

सत्ताकेविकेन्द्रीयकरणसेहीअसलीस्वराजआएगा।

–

गांवकेहितकेसाथसमूचेदेशकाहितबंधाहै।गांवकीउन्नतिसेही देशकीउन्नतिहोगी।

–

किसानमजदूरकेहितोंकीअनदेखीकभीनहींहोनीचाहिए।ये सुरक्षितहैंतोदेशसुरक्षितहै।

–

किसान को उसकी उपज का उचित मुल्य देकर ही राष्ट्र की आर्थिकस्थितिकोशक्तिऔरस्थिरतादीजासकतीहै।

–चौधरीरणबीरसिंह

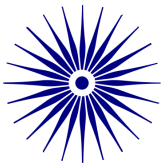

प्राक्कथन

बात काफी पुरानी है— इतनी पुरानी कि सन्–सम्वत् भी ठीक तरह से याद नहीं। हां, हरियाणा बन चुका था और राजनैतिक उथल–पुथल का दौर चल रहा था – सो एक बात तो निश्चित हुई कि 1966–67 के बाद की बात है। रोहतक में चौधरी साहब के मकान पर बैठे थे – वह और मैं। मैंने कहा, ''चौधरी साहब क्या करें? सबतरफ राजनैतिक अफरा–तफरी मची हुई है। आप वरिष्ठ नेता हैं, राह सुझाओ।''

मैंने 'वरिष्ठ' शब्द सोच समझकर इस्तेमाल किया था। और उनकी प्रकृति से बखूबी वाकिफ होने के कारण यह भी जानता था कि उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी।

'वरिष्ठ नेता', यह शब्द उचारकर चौधरी साहब बड़े जोरों से हंसे और अपने चिर परिचित लहजे में बोले, ''वाह भई सुलतान सिंह खूब कही– ''आजकल गलियां में निरे 'वरिष्ठ नेता' घूम रहे सैं। उन तैं तो पूछ! कि सैं नै मानें सैं 'वरिष्ठ नेता''?

मैंने कहा, ''चौधरी साहब, एक बात बताओ। सांविधान सभा से बड़ी तो कोई सभा ना, उसके आप मेम्बर रह चुके। लोक सभा से बड़ी कोई पंचायत नहीं। उसके आप सदस्य रहे। पंजाब में धड्ड़ले से मिनस्ट्री करी। हरियाणा में

आदर्श मंत्री रहे। पं. नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद सरीखे दिग्गज नेताओंके सीधे सम्पर्क में रहे। श्रीलालबहादुरशास्त्री, श्रीमतीइन्दिरागांधी, और बड़े-बड़े नेतागण आपको मानते हैं। आज तो हरियाणा में कोई आपसे बड़ा नेता दिखता नहीं। ''

''नहीं भई सुलतान सिंह। मैं तो गाँधीजी का अदना-सा सिपाही हूँ। और सारी उम्र उनका सिपाही, और उनके दरिद्रनारायण का सेवक रहूँगा। '' इतना कह कर, चौधरीसाहब, जैसे कोई भूली बात अचानक याद आ गई हो, खड़े होगए, और बोले, ''चल खड़ा हो, दिल्ली चलना है। और बातें रास्ते में करेंगे। ''

रास्ते में खूब बातें हुई, कुछ इधर की, कुछ उधर की, कुछ खट्टी, कुछ मीठी- लेकिन बेहद दिलचस्प और ऐसी जानकारियों से युक्त कि मैं तो सचमुच हक्का-बक्का रह गया। दिल्ली जब गाड़ी से उतरा तो एक बात दिमाग में पुख्ता बैठ गई—यह आदमी राजनीति में सही माय ने में संत है, इतना कुछ किया और न कुछ पब्लिसिटी करवाई और न ही स्वयं की। राजनीति में, और खास कर हरियाणा-ब्रांड में, तो लोग छोटी-सी पहाड़ी चढ़ कर माऊँट एवरेस्ट को विजय करने का दावा ठौंक देते हैं।

तभी से यह बात कहीं जहन में घर कर गई थी कि चौधरीसाहब के बारे में जरूर कुछ विस्तार से लिखूँगा। लेकिन राजनीति के चक्र में ऐसा पड़ा कि किसी और काम की फुर्सत ही नहीं रही। लेकिन हां, एक बात जरूर रही, जब भी कुछ फुर्सत होती मैं उनके पास चला जाता था। खूब बातें होतीं। और मेरी जानकारियों का खजाना भरता रहता।

एक दिन जब वह कुछ पुरानी बातें बता रहे थे तो मुझे लगा कि उनके भीतर हमारा बेशकीमती इतिहास भरा पड़ा है, वह उन्हें कलमबद्ध करना चाहिए। अत: मैंने उनसे कहा, ''चौधरीसाहब, अपने संस्मरण लिखो। ''

वहठहाकामारकरहंसे— ''कौनपढ़ेगा?पाठकतोबता!''

मैंनेकहा,''एकपाठकतोयहबैठा।सबपढ़ेंगे।''

जबघिर–सेगएतोबातदूसरीतरफमोड़दी।

1978 के बाद जब राजनीति से लगभग सन्यास ले लिया तो मैंने संस्मरण लिखने के लिए फिर दबाव डाला। और लोगों ने भी कहा। और अंतत:वहतैयारहोगए।फलत:हिन्दीऔरअंग्रेजीदोनोंभाषाओंमेंउनके संस्मरणआगए।छोटी–मोटीपुस्तकेंऔरआलेख भीउनकेजीवनतथा कार्योंपरछपेहैं।लेकिनइसकेबावजूदभीबहुत–सीबातेंउनकेजीवनऔर कार्योंकेविषयमेंअनकहीरहगईहैं।

चौधरी साहब के साथ मेरे, जैसा कि ऊपर संकेत कर आया हूं, 60–62 सालोंकेसम्बन्धथे—औरसम्बन्धभीऐसेजिनमेंनकभीखटास रही,नदूरी।मेरेछोटेपुत्र,प्रियवेदप्रकाशनेकहा,''बाबूजी,चौधरीसाहब केजीवनकेवेअनछुएपन्ने,जिनकोआपहमारेसामनेयदा–कदाखोलते रहतेहोप्रकाशितकरोजिससेआमलोगोंकोउनकेव्यक्तित्वऔरकार्यके विषयमेंपूरीजानकारीहो।''मनमेंरंखीपुरानीइच्छाजागृतहुईऔरनतीजा आपलोगोंकेहाथमेंहै।

पुस्तक को तैयार करने में कई महानुभावों ने महती सहायता की है। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक में स्थित चौ. रणबीर सिंह पीठ के अध्यक्ष श्री ज्ञान सिंह ने बहुत सारे मुल्यवान सुझाव दिए, मास्टर बलबीर सिंह ने कई तरह से मदद की, और प्रो. के. सी. यादव ने महत्त्वपूर्ण जानकारी और सम्पादकीय सहायता प्रदान की। मैं इन सब महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। मैं डा. आर.पी.हुड्डा, कुलपति महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,रोहतककाभीविशेषआभारीहूंजिन्होंनेअपनेयहांस्थित

चौ. रणबीर सिंह पीठ से पुस्तक को प्रकाशित कराने का मुझे सम्मान प्रदान किया।

सुलतान सिंह

विषय सूची

प्राक्कथन/7

भाग1 :जीवन-वृत

1.गांधीजीकेकारवांमें/15
2.संस्कारकीशक्ति/19

भाग2 :कर्तृत्व

3.राष्ट्रीयआंदोलनमें/35
4.साम्प्रादियकताबनामसौहार्द/40
5.संविधानसभामें/47
6.केन्द्रीयराजनीतिमें/56
7.प्रांतीयराजनीतिऔरजन-सेवा/67

भाग3 :व्यक्तित्व

8.व्यक्तित्व/81

भाग4 :परिशिष्ट

कालक्रम/105

भाग1 :जीवन–वृत

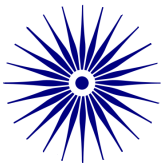

1
गाँधीजी के कारवां में

चौ. रणबीर सिंह का जीवन जितना सफल, सार्थक, और महत्त्वपूर्ण था, उतना ही, ईश्वर की कृपा से, लम्बा भी था, जिसका एक सिरा 26 नवम्बर 1914 (जन्म) को छूता था और दूसरा 1 फरवरी 2009 (मृत्यु) को। उन्होंने इसे बड़ी शालीनता और सलीके से जिया – ज्यादातर दूसरों की फिक्र की और अपने देश का हित साधा।

चौधरी साहब ने जब जीवन का सफर शुरू किया तो प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था। अंग्रेजों की जर्मनी आदि बड़े शक्तिशाली देशों से टक्कर थी। लेकिन युद्ध का फैसला उनके हक में हो रहा। इससे उनका मनोबल बढ़ा और हौसला भी। उनके साम्राज्यवादी दांत और पैने हो गए।

ऐसी मन:स्थिति और वातावरण में उन्हें, चर्चिल के शब्दों में, 'एक अर्ध-नग्न फकीर', महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी से पाला पड़ गया। न उस महात्मा के पास फौज थी, न तोप-तलवार। महाशक्तियों को धूल चटा चुके अंग्रेज मन ही मन हंसते रहते थे – तिनका तूफान के आगे ठहरा भी है कि अब ठहरेगा।

लेकिन उन की सोच बचकाना सिद्ध हुई। फकीर चलता गया, कारवां बढ़ता गया और एक दिन ऐसा आया कि उस 'अर्ध-नग्न फकीर' के

पीछेकोटि-कोटिजनआखड़ेहुए।टकराहटहुई,लेकिन,अंतत:अंग्रेज कोघुटनेटेकनेपड़े।

सन्1941मेंगांधीजीकेइसलम्बे-चौड़ेकारवांमेंचौ.रणबीरसिंह भीशामिलहोगएथे।मैंनेचौधरीसाहबसेएकबारपूछा,''चौधरीसाहब, दिल्लीकेअच्छेकालेज(रामजस)केग्रेज्युवेटहोतेहुएभीइसकारवांकी तरफकैसेमुड़े?उनदिनोंतोमैट्रिकपासकरकेहीअच्छीनौकरीमिलजाती थी, फिर बी.ए. पास का तो कहना ही क्या! ऊपर से खानदान भी पुराना, जाना-माना-जैलदारमातूरामकाखानदान।(खानदानकीतबपूछरहती थी)।कहींभीपहुंचजाते।''

चौधरीसाहबनेजवाबदिया,''भाईगांधीजीकीअहिंसावादीसेना मेंशामिलहोनेकाफैसलामैंनेनहींकिया,मुझेवहांनजानेकौन-सीशक्ति खींचेचलीगई।फैसलाअपनेआपहोगया।उनदिनोंस्वतंत्रताआंदोलनको छोड़करमेरेलिएहरचीजआकर्षणरहितथी।''

मुझे1941मेंउन्हेंगांधीजीकेकारवांमेंजाजुड़नेकेलिएप्रेरितकरने वाली 'शक्ति' को समझने में देर नहीं लगी। वह थी चौधरी साहब के पारिवारिक संस्कारोंकीशक्ति। चौधरीसाहब को जो संस्कार बपौती में मिलेथे,वेजिम्मेदारथेइसफैसलेकेलिए।

चौ.रणबीरसिंहनेसन्1941मेंकांग्रेसपार्टीका,विधिवत्,सरगर्म सदस्यबननेकाफैसलाकिया।जबचौ.मातूरामकोपुत्रकेफैसलेकापता चलातोउनकीप्रसन्नताकीकोईसीमानरही।लेकिनचौधरीसाहबनेमुझे बतायाकि''मेराफैसलासुनकरपिताजीयकायकउदासहोगएऔरबोले, ''बेटेमैंयहीचाहताथा,यहीकर।फैसला सोलह आने ठीक है। पर तुझे शायदपतानहीं,आजकलहमारेयहांऔरपंजाबमेंहमारीपार्टीमेंधड़े-बंदी

बड़ीहै।क्यातूमुंझेवायदादेताहैकिइसधड़े-बंदीसेदूररहकर,गांधीजीका सच्चासिपाहीबनकर,देशसेवाकरेगा?''

''दूसरी बात, जिस राह को चुन रहा है वह बड़ी कठिन है। वह कदम-कदम पर जोखिमों से भरी है। ऐसा तो नहीं कि कष्ट पड़े, जोखिम आएऔरतूपैरउल्टेकरले।हमारेपरिवारकायहचलनहैकिबढ़तेपैरकभी उल्टेनहींधरेगए।इनसंस्कारोंकोकभीबट्टानलगे।''

वस्तुत:पंजाबमें,औरकिसीहदतकहमारेजिलेमेंभी,हमारेबहुत सेनेतागणउनदिनोंअंग्रेजोंसेलड़नेसेज्यादाआपसमेंलड़रहेथे-शहरी, देहातीकीलड़ाईथी,औरभीमसलेथे।चौ.मातूरामतोइनचीजोंकीपरवाह नहींकरतेथे,धड़े-दलोंसेपरेरहकरअपनाकामकरतेथे।पर,उनकोचिन्ता यहथीकिकहींयुवककामनइससबसेखटट्नहोजाए।

दूसरे,उन्होंनेचौधरीसाहबकोबड़ेलाड़-प्यारसेपालाथा।कहीं जेलजीवनसेघबराकरवहवापिसनमुड़बैठे,यहबातभीउन्हेंविचलित कररहीथी।

चौधरी साहब ने पिता को वचन दिया कि ''मैनें सब बातों को देख-भाल कर सोच-समझ कर ही फैसला किया है। मैं आपका बेटा हूं। आपकेनामऔरपरिवारकीशानपरबटट्ालगे,ऐसाकामकरनातोदूर,मैं कभीसोचभीनहींसकता।आपकीछातीगर्वसेफूलीरहे,आपकाबेटा सदैवऐसेकामकरेगा।''

चौ.मातूरामकीआंखेंनमहोगईं।उन्होंनेयुवापुत्रकोरूख्सतकिया -''जाबेटा,देशकीसेवाकर,ईश्वरतेरीसदामददकरें।''

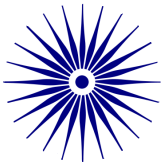

2
'संस्कार' की शक्ति

पिछले अध्याय में हमने चौधरी रणबीर सिंह कैसे स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए उस संदर्भ में 'किसी शक्ति द्वारा उन्हें इस राह पर ले जाने की चर्चा की है। कौन-सी 'शक्ति' थी वह जो उन्हें इस क ठिन राह पर ले गई? यहां, इस अध्याय में, संक्षेप में, उस 'शक्ति' के विषय में, इतिहास के कुछ पन्ने उलटते-पलटते हुए, कुछ आवश्यक बातें करेंगे।

चौधरी रणबीर सिंह का जन्म, जैसा कि पिछले अध्याय में देख चुके हैं, 26 नवम्बर 1914 को, जिला रोहतक के ऐतिहासिक गाँव सांघी में हुआ था। उनके पिता, चौ. मातूराम जी इलाके के जाने-माने सरदार थे। जाट बिरादरी के साथ-साथ सब छत्तीसों बिरादरियों में उनकी पूछ थी। सरकार ने भी उनकी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर ही, उनके पिता, चौ. बख्तावर सिंह के असामयिक निधन के बाद, उन्हें जैलदार बनाया था। बाद में सरकार ने उनके राष्ट्रीय कामों से नाराज होकर जैलदारी छीन भी ली थी।

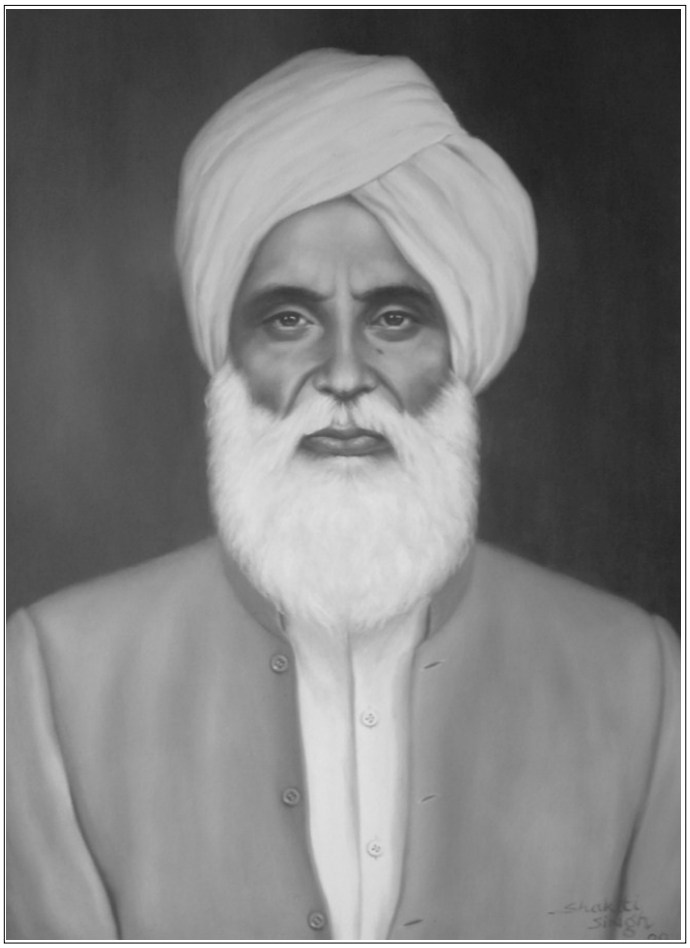

चौधरीसाहबकेपिता,चौधरीमातूरामजिनकीप्रेरणासेवहराष्ट्रीयआन्दोलनतथा जन-सेवाकेक्षेत्रमेंजीवनभरकार्यरतरहे

सांघीग्रामकाचौ.रणबीरसिंहकीपैतृकहवेलीसेलियागयाचित्र

जन्म-स्थल:सामनेवालेकमरेमेंचौ.रणबीरसिंहने26नवम्बर1914कोजन्मलिया

चौ. मातूरामबड़ेसमझदारव्यक्तिथे।पढ़ेतोज्यादानहींथे,परगुणे थे।जबआर्यसमाजकासुधारआंदोलनचलातोउसमेंचौ.मातूरामनेखूब दिलचस्पीली,क्योंकिउसमेंउन्हेंअपनेगरीब,पिछड़ेसमाजकीउन्नति केसाधननजरआए।खासकरआर्यसमाजकीसबकोबराबरकादर्जादेने कीबातउन्हेंबहुतपसंदआई।उनदिनोंहमेंसमाजमेंदूसरेदर्जेपररखाजाता था–वर्णकेलिहाजसेशूद्रोंकादर्जामिलाहुआथा।नहमजनेऊपहनसकते थे, न सांस्कृतिक रूप से सभ्य कहलाते थे। चौ. मातूराम ने इस अभद्र व्यवहारकाविरोधकिया,औरहमेंहमारेहीवर्ण,क्षत्रीयमेंरखनेकीपुरजोर वकालत की। इस दर्जे–बदल के अनुरूप जैलदार साहब ने स्वयं जनेऊ लियाऔरअपनेसबभाई–बिरादरीकोऐसाहीकरनेकाआह्वानकिया।

इसके साथ ही चौ. मातूराम ने अपने लोगों से आर्य समाज को अपनाकरउसकेसुधारकेकार्यकोआत्मसातकरनेकीभीअपीलकी। पुरानी रूढ़िवादी व्यवस्था को चुनौती देते हुए उन्होंने आर्य समाज का क्रांतिकारीसंदेशघर–घरपहुंचाया।रातकेसन्नाटेमेंउनदिनोंस्त्रियोंके मधुरगीतोंकेयेशब्दहवामेंतैरतेरहतेथे:

घर–घरबांटोमिठाई,
हेमातूरामआर्यहोग्या।
रलमिलगाओबधाई,
हेमातूरामआर्यहोग्या।
झूठांकीपोलखुलाई,
हेमातूरामआर्यहोग्या।

. . .

इससबसेआर्यसमाजकीखूबप्रसिद्धिहोगई,जिसकीवजहसे कुछसनातनीभाईबड़ेघबरागए।अपनीरोटी–रोजीकोखतरेमेंपड़तेदेख उन्होंने आंदोलन के सिरमौर, चौ. मातूराम पर सीधा प्रहार किया। ''चौ.

मातूराम का जनेऊ लेना शास्त्रों की आज्ञा का उल्लंघन है। यह महापाप है। इसे फौरन उतार दें, ''उन्होंने तकाजा किया।

यही नहीं, उन्होंने चौ. मातूराम की बिरादरी के भोले–भाले लोगों को भी बहका दिया – ''अब देखना क्या भयंकर नतीजे निकलेंगे। अकाल पड़ेंगे। महामारियां आ जाएंगी। प्रलय हो जाएगी, ''आदि, आदि। इस से बहुत से अनजान लोग घबरा भी गए।

फूला पंडित नाम का एक व्यक्ति इस मुहीम का संयोजक था। उसने अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए काशी तक से पंडित बुलवा लिए। उन्होंने खूब प्रचार किया और अंत में खडवाली में पंचायत कर डाली। पंचायत में काशी के पंडितों द्वारा चौ. मातूराम से कहा गया कि ''जनेऊ उतारें और माफी मांगे। ''

इस पर चौ. मातूराम गर्जे, ''क्या कहा, जनेऊ उतारूं ? कभी नहीं। और अगर कोई दूसरा आकर उतारना चाहे वह भी सुन ले, जनेऊ कीकर के पेड़ पर नहीं टंका है। मेरी देह पर है, और वह मेरा सिर काटकर ही उतारा जा सकता है। आओ, उतार लो। ''सब तरफ सन्नाटा फैल गया।

काशी के पंडित ने दूसरा पैंतरा फैंका – ''यदि चौ. मातूराम जनेऊ नही उतारते हैं तो इनका सामाजिक बहिष्कार किया जाए। इन्हें हुक्का-पानी कोई नहीं देगा। न कोई इनके घर जाएगा, न ये किसी के द्वारा बुलाए जाएंगे। ''

इसका उत्तर भी चौधरी साहब ने उसी लहजे में दिया, ''पंडित जी, मैं तो बिना बुलाया कहीं जाता ही नहीं। मेरे भाई प्रेम से, आदर से मुझे बुलाते हैं, उनके घर जाता हूं। हमारा सामाजिक रिश्ता इतना हल्का नहीं कि कोई फूंक मारे और उड़ जाए। ''

बस इतना कहना था कि खडवाली के ही बहुत-सारे लोग खड़े हो गए। बोले, ''पंडित, के बहिष्कार, बहिष्कार लगा रखा सै। मातूराम म्हारा भाई सै। आ जैलदार म्हारे घर चाल। कर म्हारा भी बहिष्कार, अर देख तमाशा ''। और कई लोगों ने भी यही पेशकश कर डाली। परिणामत: पंचायत बिखर गई। 'मातूराम की जय' के नारे लगने लगे। न फूला पंडित कहीं नजर आया, न उसके हिमायती।

इसके बाद सुधार आंदोलन और तेज गति से चला। जाटों की बरौनी गाँव में 7 मार्च 1911 को ऐतिहासिक महापंचायत हुई। उसमें 50 हजार आदमी आए। इस महापंचायत में शिक्षा की बढ़ौतरी और कुरीतियों के विरूद्ध कई फैसले लिए गए। उन पर अमल भी हुआ।

महापंचायत के दो वर्ष बाद (1913 में) रोहतक में एंग्लो-संस्कृत जाट हाईस्कूल की नींव पड़ी। स्कूल की नींव पड़ने की कहानी दिलचस्प है। हरियाणा के कुछ विद्यार्थी उन दिनों, घर-परिवार में आर्यसमाज का प्रभाव होने के कारण, डी.ए.वी. कालेज लाहौर में पढ़ते थे। उन्होंने वहां के रंग-ढंग देखकर फैसला किया कि हमारे यहां भी रोहतक में कोई अच्छा स्कूल खुले। इन विद्यार्थियों के मुखिया थे भानीराम। बलदेव सिंह भी उन के साथ थे। गर्मियों की छुट्टियों में ये विद्यार्थी अपने घर आए तो बिरादरी के चौ. मातूराम जैसे बड़े-बड़े लोगों से मिले। चौ. मातूराम ने अन्य लोगों से बात की। सेठ छाजूराम से सम्पर्क किया। सबने योजना को सिरे चढ़ाने का आश्वासन दिया।

दुर्भाग्य से थोड़े समय बाद युवक भानीराम का देहान्त हो गया। चौ. बलदेव सिंह आदि ने योजना को उठाए रखा। चौ. मातूराम ने जमीन आदि का प्रबंध करके अंतत: 1913 को एंग्लो संस्कृत जाट हाईस्कूल, रोहतक की नींव रखी। शिक्षा के प्रसार के लिए, आम लोगों की उन्नति के लिए, संस्था ने

बहुतबड़ायोगदान दिया।कुछसमयबाद चौ. छोटूरामतथालालचदंजीने संस्था को दूसरा रूप देने की बात की जिस के फलस्वरूप दो संस्थाएंबन गईं। सेठ छाजूराम तथा अन्य बिरादरी के लोगों के बीच-बचाव से सन् 1926 में फिर दोनों संस्थाएं एक हो गईं। इस के बाद संस्था ने खूब तरक्की की,जिसकाश्रेयबहुतहदतकचौ.मातूरामकोजाताहै।

राष्ट्रीय आंदोलन में भी चौ. मातूराम ने खूब बढ़-चढ़कर काम किया।वहहमारेक्षेत्रमेंइसरंगमेंरंगेजानेवालेपहलेनेताओंमेंअग्रणीथे। पंजाब के 1905-1907 के किसान आंदोलन को उन्होंने धन और मन

वह जमीन जिसपर चौ. मातूराम ने सेठ छाजूराम तथा बिरादरी की मदद से एंग्लो-संस्कृत जाट स्कूल बनवाया।

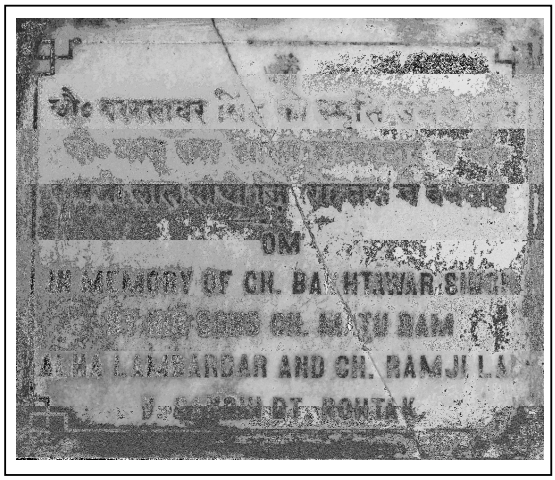

स्कूल की वह इमारत जो चौ. मातूराम ने बिरादरी की सहायता से बनवाई थी अब पुरानी होने के कारण नहीं रही है। वहां चौधरी साहब द्वारा अपने निजि खर्च से बनवाया कमरा (क्लास रूम) भी नहीं रहा है। उस पर लगा

पत्थर ही शेष बचा है।

No. 347 9/11/26

پنچ فیصلہ

Ramji Lal

Lal Chand

Chhotu Ram

Certified to be a true copy

District Registrar of Firms & Societies, Rohtak, Haryana

दो जाट स्कूलों के मिलन की ऐतिहासिक दस्तावेज जिस पर सेठ छाजूराम, चौ. रामजीलाल, सर छोटूराम और चौ. लालचंद के हस्ताक्षर हैं।

से सहायता की। जब इस आंदोलन के नेता, सरदार अजीत सिंह (स. भगतसिंह के चाचा) भूमिगत हुए तो सांघी में चौ. मातूराम के पास आर्य संन्यासीकेभेषमेंकईदिनरहे।अंग्रेजकोइसकापतातभीचलाजबसरदार साहब वहां से चले गए और उन्होंने गिरफ्तारी दे दी। इससे अंग्रेजी शासन-तंत्रबड़ानाराजहुआ।पंजाबकेतत्कालीनलेफ्टिनेंट-गवर्नर,सर डेंजिलइब्बटसननेउन्हेंउनकेमित्रलालालाजपतरायऔरसरदारअजीत सिंह की तरह देश से निष्कासित करने की सोची। पर चौधरी साहब के विरूद्ध गवाही देने वाला कोई नहीं मिला। दूसरे, उनके दोनों मित्रों के निष्कासनकोलेकरबड़ाभारीबखेड़ाखड़ाहोगयाथा जिसकेकारणउन्हें छोड़देनापड़ाथा।इसलिएभीलेफ्टिनेंट-गवर्नरढीलापड़गयाऔरउनकी जैलदारीछीनकरहीउसेकलेजाठंडाकरनापड़ा।

गाधाजी के असहयोग आंदोलन (1920-22) को कामयाब बनानेमेंचौ. मातूरामनेबड़ा योगदान दिया।16 अप्रैल1921 कोगांधीजी रोहतकआए।चौ.मातूरामउन्हेंगाजे-बाजेसेजाटस्कूलमेंलेगए।उन्होंने गांधीजीकेआह्वानपरअपनेस्कूलकोपहलेहीराष्ट्रीयस्कूलबना दिया था।शामकोचौधरीसाहबनेगांधीजीकीसभाकीप्रधानताकी।25हजार लोगसभामेंहाजिरथे।गांधीजीबड़ेखुशहुए।

इसअवसर परमहिलाओंकीभीसभा हुईथी।उसमेंबा (श्रीमती कस्तूरबा) नेअध्यक्षताकी।चौ. मातूरामकीधर्मपत्नी,श्रीमतीमामकौर गाँव की स्त्रियों के साथ 'गांधी

चौ.रणबीरसिंहकीमाताजीश्रीमतीमामकौरजिन्होंनेमहिलासभा
केआयोजनमेंभागलिया।सभाकोगांधीजीनेसम्बोधितकिया

The Tribune

Lahore, February 19, 1921

MAHATMA GANDHI'S TOUR,
MEETINGS AT KALANAUR AND ROHTAK

Rohtak, Feb. 17.

Mahatma Gandhi and party left Bhiwani yesterday morning by motor and on their way stoped for an hour to address a meeting at Kalanaur. ….

The party arrived at Rohtak at about 12 noon. The first function was a visit to the Jat School, which had been lately nationalized. A vast multitude had assembled there. Short speeches were delivered and the foundation stone of the Vaisya High School was laid and a meeting was held. Then Mahatmajee went to the ladies' meeting and addressed them.

The Party then went to the Conference. The same resolutions which were passed at Bhiwani were passed unanimously; and the meeting was addressed by all the leaders. More than 25 thousand people attended. Chaudhary Matu Ram presided. The whole audience received with applause the announcement of L. Sham Lal, the leading local Vakil, that he suspended his practice for one year from the 1st March. The Headmaster, Gaur High School declared, that he had resolved to give up his present post and no more employ himself in any government or aided school. Great enthusiasm prevailed throughout the day; and the Haryana Rural Conference, which began its sitting at Bhiwani, was brought to a close at Rohtak. Amidst shouts of *Bandemataram* and *Allah-o-Akbar*, Mahatmaji, Lalaji and Maulanaji left for Lahore is the evening.

'ट्रिब्यून' (लाहौर) की 'खबर 'जिसमेंगांधीजीकीसभा कीचौ.मातूरामद्वाराप्रधानताकरनेकाउल्लेखहै।

की आंधी आई, भाण रंग बरसै गा 'गीत गाती हुई शामिल हुई थीं।

1923 में चौ. मातूराम ने पंजाब विधान परिषद का चुनाव लड़ा। चौ. लालचंद गलत तरीकों से इस चुनाव में विजयी रहे। चौ. मातूराम के साथियों ने उन्हें चुनाव को चुनौती देने के लिए कहा। चौ. मातूराम ने कहा, ''छोड़ो, पाप का घड़ा अपने आप फूट जाएगा। हमारे कुछ करने की जरूरत नहीं।''

साथी लोग नहीं मानें। अंतत: चौ. मातूराम ने चौ. लालचंद के चुनाव को पंजाब हाईकोर्ट में चुनौती दे दी। हाईकोर्ट ने चौ. मातूराम की बात सही ठहराई। चौ. लालचंद का चुनाव रद्द हो गया। चौ. लालचंद उस समय पंजाब में मंत्री बन गए थे। उनकी मेम्बरी और मंत्री पद दोनों जाते रहे। उनकी जगह चौ. छोटूराम मंत्री बने। इससे पूरे पंजाब की राजनीति में एक नया अध्याय लिखा जाना शुरू हुआ।

चौ. मातूराम ने गाँव-गोहाड में राष्ट्रीय आंदोलन को ले जाने में कोई कसर बाकी न छोड़ी। समाज का भी खूब काम किया। दुर्भाग्य से सन 1942 के आते-आते उनका स्वास्थ्य जवाब दे गया। थोड़े समय बाद उनका देहान्त हो गया।

चौ. मातूराम सरीखे प्रखर राष्ट्र-भक्त पिता का बेटा किस रास्ते पर जाएगा, इसमें सोचने की गुंजाइश ही नहीं है। पिता के ही संस्कार थे जो चौ. रणबीर सिंह को राष्ट्रीय आंदोलन में खींच कर ले गए।

भाग2 :कर्तृत्व

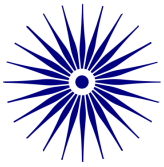

3
राष्ट्रीय आंदोलन में

चौ. रणबीर सिंह की राष्ट्रीय आंदोलन में पहली गिरफ्तारी व्यक्तिगत सत्याग्रहकेअंतर्गतहुईथी।हरियाणाकेएकबड़ेअच्छे,कर्तव्यनिष्ठ,और कर्मठकांग्रेसीकार्यकर्ताथेमास्टरनान्हूराम।जसराणाकेरहनेवालेथे।बाद मेंदोबार विधायकभीरहे।उन्होंनेमुझेचौधरीसाहबकीइस गिरफतारीका बड़ारोचक विवरण दिया।(कांग्रेसकमेटीरोहतकने गिरफतारीकेसमय उन्हें जलसा करके चौधरी साहब को विदा करने की जिम्मेदारी दीथी। नान्हूरामजीनेबतायाकि,

''शुक्रवारकादिनथा।मैंसुबहहीसांघीपहुंचगया। रणबीर सिंह ने जलसेकाइन्तजामकररखाथा।पर जलसाशुरूहोनेकेबादहमनेंउन्हें उससेदूररखा। खूब भाषण हुए। देशभक्ति के भजन गाए गए। मैंने भी तकरीरकी।※

※ *यहतथ्यडॉ.के.सी.यादवद्वारासम्पादित,'मास्टरनान्हूरामकीडायरी' में भी लगभगइसीतरहदर्जहै।*

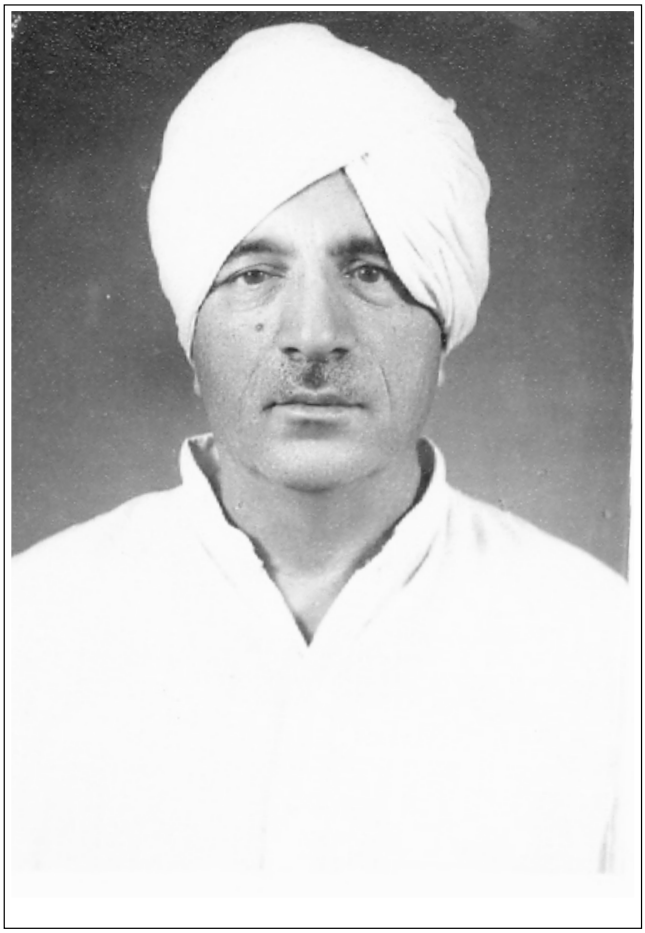

चौ0 रणबीर सिंह, युवा सत्याग्रही के रूप में

''शाम को फिर जलसा जुड़ा। वही क्रम रहा। अब भी खूब भाषण हुए।खूब भजन गाए गए।मैंने फिर भाषण दिया।जब सूर्य छिपने को हुआ तो चौ.रण्बीर सिंह को स्टेज पर लाया गया।वह फूलों से लदे हुए थे।'भारत माता की जय','महात्मा गांधी की जय','चौ. रणबीर सिंह की जय'के नारों से जमीन आसमान-गूंज उठे।

पुलिस तैयार थी ही। तुरंत स्टेज पर दौड़ कर चढ़ गइ। चौ. रणबीर सिंह ने सब को हाथ जोड़ कर नमस्ते की और हंसते-हंसते गिरफ्तारी दी।

पुलिस उन्हें (चौधरी रणबीर सिंह को) पकड़ कर रोहतक जेल ले गई।सभा स्थल 10-15 मिनट तक नारों से गूंजता रहा।

इस ऐतिहासिक कार्य के बाद मैं रात को साघी में ही रहा।दूसरे दिन जसिया गया और वहां से रोहतक चला गया''।

यह थी चौ. रणबीर सिंह की भारत की स्वतंत्रता हेतु दी गई पहली गिरफ्तारी। इसके बाद उनकी गिरफ्तारियों का सिलसिला निरंतर चलता रहा। कुल मिला कर उन्होंने 3½ वर्ष की कैद बामुस्क्कत और 2 वर्ष की नजरबंदी की सजा झेली—हंस-हंस कर। दूसरे शब्दों में उन्होंने 1941 से 1947 तक के छ: वर्षों में केवल छ: महीने ही खुली स्वतंत्र हवा में सांस ली थी।

1946 मे पंजाब विधान सभा के चुनाव हुए। उस समय चौ. रणबीर सिंह जेल में थे। लेकिन आजादी आने वाली है, यह सब जानते थे और इसलिए यह भी निश्चित था कि चौधरी साहब जेल से जल्दी ही रिहा हो जाएंगे। उन्होंने जेल से ही चुनाव लड़ने की इच्छा जाहिर की। और भी बहुत-से प्रत्याशी थे। जेल में रह रहे आदमी की पैरवी ढीली ही होगी, यह तो

स्पष्टबातथी।दूसरे,अन्यलोगोंनेखूबघोड़ेदौड़ाए।इलाकेमेंकुछधड़ेबंदी थी।इससबकानतीजायहरहाकिचौधरीसाहबकोटिकटनहींमिली।

लोगोंनेइसका बुरा मनाया।इसीसमय मियांइंपितखारूद्दीन,जो पंजाबप्रदेशकांग्रेसकेअध्यक्षथे,रोहतकआए।सैंकड़ोलोगउनकेसामने पेशहुएऔरकहाकि,''चौ.रणबीरसिंहकोटिकटदियाजाए''।मियांजीने कहाकि,''चौ.रणबीरसिंहतोजेलमेंहै,उनकाचुनावकौनलड़ेगा?आप कहेंकिहमलड़लेंगे,ठीकहै।पैसाकहांसेआएगा''?

मुंगाणगांवकेचौ.धर्मसिंहबड़ेसम्पन्नपुरूषथे।वहवहींथे।उन्होंने कहा,''मुझेआधाघंटादेदो,पैसा भीआजाएगा''।धर्मसिंहअनाजमंडी (रोहतक) गएऔर20,000रूपयेउठालाए।यहरकमउससमयबहुत बड़ीरकमथी।धर्मसिंहनेपैसेमियांसाहबकेसामनेमेजपररखदिएऔर कहाकि,''यहतोचुनावखर्चहै,औरसैंकड़ोकार्यकर्ताआपकेसामनेखड़े हैं।रणबीरकेपिताचौ.मातूरामकाएक-एकगांव,गलीऔरघरतकनाम है।फिरबताइयेचुनावलड़नेमेंक्यादिक्कतहै''?

मियांसाहबकेपासजवाबनहींथा,परराजनैतिक खिलाड़ियोंके पासथा-चौधरीसाहबकोटिकटनहींमिलीतोनहींमिली।

थोड़ेसमयबादचौधरीसाहबजेलसेछूटगए।चुनावोंकीगर्मीथी। गांधीजीकेउससत्याग्रहीनेअपनीहकतल्फीकेबारेमेंनकोईबातकी,न मलालमाना।ठंडेदिल-दिमागसेकांग्रेसकेप्रत्याशियोंकोजितानेमेंलग गए।जमीन-आसमान एक कर डाला।कांग्रेस प्रत्याशियोंको शानदार विजयमिली।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ।मैंकांग्रेस की सक्रिय राजनीतिमें1946 मेंआगयाथा।चौधरीसाहबकोमैंनेउनकेनिवासपर जाकरमुबारकबाददी।उन्होंनेलड्डूबांटे।सारादिनउत्सवमनतारहा।

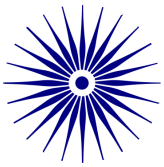

4
साम्प्रदायिकता बनाम सौहार्द

स्वतंत्रता और साम्प्रादायिकता का बुखार एक साथ आए। रोहतक जिला साम्प्रादायिकता के रोग से बुरी तरह प्रभावित हुआ। जगह-जगह मार-काट हो गई। चौ. रणबीर सिंह ने इन दिनों बहुत ही समझदारी से काम किया। कई नेता साम्प्रादियक भावना के आगे टिक न सके, पर चौधरी साहब अपने सैक्युलर सिद्धान्तों पर अडिग खड़े रहे।

मैं उन दिनों कांग्रेस सेवा दल का सक्रिय वालिन्टियर था। कांग्रेस नेतृत्व जो भी आदेश देता वह मानता और दूसरे लोगों को भी वैसा ही करने के लिए कहता। चौधरी साहब ने जगह-जगह पंचायतें बुलाकर मुसलमानों की रक्षा हेतु फैसले कराए। ऐसी एक बड़ी पंचायत बसंतपुर गांव में की गई, जिसमें कान्ही गांव के कैप्टन फतेह मुहम्मद को अध्यक्ष बनाया गया और इसमें फैसला हुआ कि हम किसी भी कीमत पर अपने क्षेत्र में हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा नहीं होने देंगे। चौधरी साहब ने मुझे पंचायत से पहले ही बुला लिया था। मैं उस पंचायत में हाजिर था। चौधरी साहब ने मुझे इस पंचायत में बोलने का मौका भी दिया। उसके बाद इलाके में लोग मुझे जानने लगे। पंचायत का काफी असर रहा। कोई दंगा-फसाद नहीं हुआ। मुसलमान राजी-खुशी पाकिस्तान चले गए।

उस समय रोहतक शहर में स्थिति बहुत खराब थी। स्थिति को नियंत्रण में करने हेतु चौधरी साहब गांधीजी को बुला लाए। किला रोड पर कुछ मुस्लिम नेशनल गार्ड के लड़कों ने गांधीजी के खिलाफ नारे लगाने शुरू कर दिए और उनकी गाड़ी पर मुक्के वगैरा भी मारे। पंजाब के वरिष्ठ कांग्रेसी नेता, दीवान चमनलाल महात्मा गांधी के साथ आए थे और वह महात्माजी की गाड़ी में थे। चौधरी रणबीर सिंह पीछे थे। दीवान चमनलाल ने गाड़ी से उतरकर मुसलमान भाईयों को कहा कि, ''महात्मा गांधी तो चौधरी रणबीर सिंह की प्रार्थना पर आपका बचाव करने आए हैं और आप इनके साथ दुर्व्यवहार कर रहे हो। मैं एक ही बात आप लोगों से कहता हूं कि अगर गांधीजी को कुछ हो गया तो तुम्हारी भी खैर नहीं। और सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए यह बड़ा दुखदायी होगा। ''

ज्यादा खराबी बढ़ने की आशंका देखते हुए चौधरी रणबीर सिंह चलती गाड़ी से ही नीचे उतर पड़े और कहा कि, ''मैं रात-दिन आपके बचाव में घूम रहा हूं और गांधीजी को आपके बचाव के लिए लाया हूं। मैं संविधान सभा का सदस्य हूं और साघी गांव के चौ. मातूराम का बेटा हूं। आप हैं कि किसी की बात ही नहीं सुनते। कान खोलकर सुनो... ''

चौधरी साहब ने बात खत्म भी नहीं की थी कि कुछ बुजुर्ग मुसलमानों ने जोर से चिल्ला कर कहा, ''चौधरी रणबीर सिंह हमारा आदमी है। यह हमारे मेहरबान दोस्त का बेटा है। ''मुसलमानों का रूख बदल गया। वे गांधीजी की जय बोलने लगे। गांधीजी और दीवान जी दृश्य को देख कर बड़े प्रभावित हुए।

थोड़े समय बाद, चांदी गांव में हालात बिगड़ गए। कुछ लोगों ने गाँव पर अचानक हमला कर दिया। बहुत सारे मुसलमान कत्ल हुए। कुछ मुस्लिम औरतें कुएं में कूद गईं। चौधरी रणबीर सिंह ने जाकर उनको कुंए से

निकलवाया,उपचार करवाया,और कैम्प में भेजा। मैं इस सारे मामले में उनकेसाथथा।

जबरोहतक सामान्य होगयातो चौधरीसाहब मेवात कीतरफ मुड़े। यहांहालातबहुतबुरेथे।चौ.मुहम्मदयासीनखाँसाहब,जोमेवोंकेएकमात्र नेताथे,औरसरछोटूरामकेसाथीथे,उन्होंनेमुस्लिमलीगकोकभीकबूल नहींकियाथा,वह चौधरीसाहब केपास पहुंचे और कहा,''भाईरणबीर सिंह,मेवपाकिस्तानजानेकीतैयारीकररहेहैं।अगरमेवमेवातकोछोड़गए तोयहांकाधर्म–निरपेक्षरूपखत्महोजाएगा''।

चौधरीरणबीर सिंह यासीन खांको लेकर गांधीजीके पास पहुंचे। गांधीजी ने स्वयं मेवात आने का फैसला किया। पंजाब के मुख्यमंत्री डॉ. गोपीचन्दभार्गवपहलेहीवहांपहुंच

घासेड़ा(मेवात) मेंगांधीजीकीसभा,मंचपरचौधरीसाहबभीबैठेहैं।येसभा
चौ.यासीनखांतथाचौ.रणबीरसिंहनेआयोजितकीथी

महात्माजीकीघासेड़ासभामेंउमड़ीमेवोंकीभीड़

गए।गांधीजी,चौ.यासीनखां,चौधरीरणबीर सिंह,रेवाड़ागांवकेकैप्टन प्रीतसिंह,जोआई.एन.ए.केकैप्टनथे,इनकोसाथलेकरगांवघासाहेड़ामें आए।मेवोंकीबड़ीभारीभीड़थी।गांधीजीनेमेवोंकोआश्वासन दिया कि आपभारतनछोड़िए।आपअच्छेभारतीयबनकररहेंऔरआपकेसाथकोई अन्यायनहींहोनेदियाजाएगा।इसकेबादमेवोंकेकाफिलेरूकगए।

मुजारों की सहायता

हरियाणामेंबहुतसेगाँवमुजारोंकेथे।येअंग्रेजोंका विरोधकरनेकीवजहसे पैदाहुएथे।गुस्साएअंग्रेजोंनेइनकीजमीनछीनलीथीऔरयेमुजारेबनगए थे।

जमींदारलोगइनमुजारोंकोबहुततंगकरतेथे।चौ.रणबीरसिंहने मुजारोंका डट कर पक्ष लिया और मामला आखिर पं. जवाहरलाल तक पहुंचाया,जिसकीवजह सेवेबहुत सारेजुल्मोंऔरबेदखलीतक सेबच गए।येगांवकलानौरकेपासगुढाण,जींदराण,सांगाहेड़ा,सोनीपतकेपास कुण्डली, लिबासपुर, हरसाना, बहादुरगढ़ के पास बरकलाबाद (नयागांव),बालौर,आदिथे।झज्जरकेपासगुढ़ा,महराणा,चमनपुरा, छुछकवासऔरनाहड़केपासकईऔरगांवथे।इनमेंकुछगाँव मुस्लिम राजपूतोंकीठेकेदारीमेंथे,कुछसोनीपतकेपांडितोंऔरकुछखरखौदाके मेहरबानऔरअस्मतअलीऔरकुछगांवनवाबदुजानाकेजागीरदारीमेंथे। चौ.रणबीर सिंहकेप्रयासोंसेमुजारे– किसानबेदखलीसेबचेऔरआज सभीअपनीजमीनोंकेमालिकहैं।

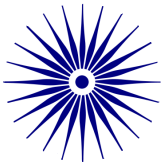

5
संविधान सभा में

पंजाबमें1946केचुनावोंकेफौरनबाद,पंजाबविधानसभाद्वारापंजाबकी तरफसेसंविधानसभाकेलिएनिम्नलिखितसदस्योंकाचुनावहुआ:

मुस्लिम

1. *सरमुज्फफरअलीकिजिलबाश*
2. *मोहम्मदअलीजिन्ना*
3. *अब्दुलराबनिश्तार*
4. *इफ्तिखार हुसैनखां*
5. *मियांमुम्ताजदौलताना*
6. *सरफिरोजखांनून*
7. *राजागजनफफरअलीखां*
8. *प्रो.अबुबकरहलीम*
9. *मियाइंफ्तिखारूद्दीन*
10. *चौ.मुहम्मदहसन*
11. *शेखकरामतअलीशाहनवाज*
12. *बेगमजहानआरा*
13. *मीरगुलामभीकनैरंग*

14. नजीरअहमदखां
15. डॉउमरहयातखां
16. सैयदअमजदअली

हिन्दू

17. चौ.सूरजमल
18. गोपीचंदभार्गव
19. पं.श्रीरामशर्मा
20. सरटेकचंद
21. पृथ्वीसिंहआजाद
22. दीवानचमनलाल
23. मेहरचंदखन्ना
24. चौ.हरभजराम

सिख

25. स.हरनामसिंह
26. स.करतारसिंह
27. स.प्रतापसिंह
28. स.उज्जलसिंह

लेकिनइससेपहलेकियेसदस्यअपनाकामसंभालते,देशकाविभाजनहो गया।अधिकतरमुस्लिमसदस्यपाकिस्तानचलेगए।हिन्दू–सिखोंमेंसे बहुतोंकोदूसरेरोलदेदिएगए।अत:भारतसरकारकेदूसरेनोटिफिकेशन केअंतर्गतपंजाबविधानसभाद्वारासंविधानसभाकेनएसदस्योंकाचुनाव हुआ।चौधरीसाहबकानामइनसदस्योंमेंथा।उन्होंने14फरवरी1947को

संविधानसभाकेसदस्यकेतौरपरशपथली,रजिस्टरमेंहस्ताक्षर किएऔर अपनाकार्यभारसंभाला।

मैंउस दिन दर्शक दीर्घा में मौजूद था। चौधरी साहब का नाम बोला गया। सफेद खदद्र के धोती-कुर्ते,नेहरू जैकेटऔर पगड़ीमें वह सब से अलग दिखरहेथे।जबवहशपथलेनेके लिएउठेतोमेजोंकीथपथपाहटसे सभा-कक्षगूंजउठा।

चौधरीसाहब नेसंविधानबनानेमेंकाफीयोगदान दिया।उसमहान सभा में,आश्चर्यकीबात है कि,गाँव,कृषि,गरीब की बात बहुत हीकम होतीथी। चौधरीसाहब नेइस कमीको पूरा किया। वह इन विषयों पर खूब बोले।उनकेभाषणबड़े दिलचस्पहैं।संविधानसभाकेप्रकाशित डिबेट्स मेंउन्हेंदेखाजासकताहै।

एक दिन मुझे चौधरीसाहब द्वारा भेजा संदेशा मिला कि, ''सुबह सवेरेदिल्लीपहुंचनाहै।सारादिनखालीरखना।मेरेसाथरहोगे।''

मैंसुबहहीउनकीकोठीपरपहुंचगया।नाश्ता किया। फिरसंविधान सभाकादर्शक-पास दियाऔरकहा,''आजमेरापहलाभाषणहै,सुनना औरबतानाकैसालगा- बिनालाग-लपेटके,जिससेआगेकेभाषणोंको तैयारकरनेमेंसहायतामिले।''

मैंनेकहा,''न्यौतेकेलिएधन्यवाद।मैंकईदिनसेसंविधानसभाकी कार्रवाईदेखनेकीइच्छाकररहाथा।रहीआपकेभाषणपररायदेनेकीबात, सोयहतोमेरेजैसेनवसिखयेकाकामनहीं।''

वह बोले, ''मैं जानता हूं, 'नवसिखए ही सही बात बोलते हैं', तजुर्बेकारघाघनहीं।चलहोतैयार।''

हम दोनों संविधान सभा में दाखिल हुए। उन दिनों कोई चैकिंग-वैकिंग थीहीनहीं। सैक्युरिटीवालोंनेमामूलीफोरमेल्टीकरके मुझेदर्शकदीर्घामेंबैठादिया।

चौधरीसाहबनेभाषणमंजेहुएवक्ताओंकीतरह दिया,हालांकि यहउनका,ऐसीसभामेंबोलनेका,पहलाअवसरथा।नकोईनर्वसनस,न कोईहिचकिचाहट,नआवाजमेंकम्पन,नबॉडीलैंग्वेजमेंकोईकचाई— खड़ेहुए,भाषणशुरूकियाऔरदनादनबोलतेचलेगए।जबभाषणखत्म हुआतोबहुतसेलोगोंनेउन्हेंमुबारकबाददी।

क्या था उनके भाषण का लब्बो-लबाब? यह कहना मुश्किल हो इसलिएमैंपाठकोंकीसुविधाकेलिएउनकापूराभाषणहीनोटकिएदेताहूं :

"सभापति महोदय, मैं डॉ. अम्बेडकर के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए दो-एक नम्र निवेदन करना चाहता हूं। मैं सेठ गोविन्ददासजीकीतरह इस बात का हामी हूं कि यह अच्छा होता कि हम आरम्भ में ही राष्ट्रगीत, राष्ट्रपताकाऔरराष्ट्रभाषाकाफैसलाकरते।मैत्रीजीनेजोबातकलकही थी,उसके विषयमेंयह कहना चाहता हूं कि,इसमेंकोईशक नहींकि हम दक्षिणकेसाथियोंसेआजतकतवक्कोनहींकरसकते कि वह एकदमसे हिन्दीमें ही बोलें और हिन्दी में ही काम चलावें, लेकिन राष्ट्र-भाषा का फैसलापहलेहोनेसेएकफायदायहहै किलोगोंकोयहपतालगजाएगा कि देशकीकौनसीराष्ट्रभाषाहैऔरउनकोराष्ट्रभाषासीखनेकेलिएप्रयत्न करनाचाहिए।

इसकेबाद,मैंशक्तिकेएकीकरणयाप्रथक्करणकेझगड़ेमेंबहुत ज्यादानहींजाना चाहता। लेकिन मैंइस सभा का ध्यान एक बात कीतरफ दिलानाचाहताहूं।राष्ट्र-पितामहात्मागांधीनेहमेशाहमेंयह सिखायाहै कि

चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या आर्थिक क्षेत्र, उसके अन्दर प्रथक्करण से जो ताकत पैदा होती है, वह ज्यादा मजबूत होती है। मेरे लिए इसके अलावा और दूसरे कारण हैं, इसका समर्थन करने के लिए। मैं एक देहाती हूं, किसान के घर में पला हूं और परवरिश पाया हूं। कुदरती तौर पर गाँव का संस्कार मेरे ऊपर है और उसका मोह और उसकी सारी समस्यायें आज मेरे दिमाग में हैं। मैं यह समझता हूं कि इस देश में जितनी बड़ी संख्या देहातियों की है, उतना हक उनको मिलना चाहिए और हर एक चीज के अन्दर देहात का प्रभुत्व होना चाहिए।

इसके आगे एक और बात है, जिसकी तरफ आज सुबह बाबू ठाकुरदास ने ध्यान दिलाया था। वह यह है कि देहाती और शहरी नश्तों की तफरीक मिटा दी जाए। इसमें कोई शक नहीं है और मैं इसको मानता हूं कि अगर हम बहुत आगे की बातें सोचें, तो इसमें देहात का फायदा है, खासतौर पर हिन्दुस्तान जैसे देश के अन्दर, जहां पर कि 7 लाख देहात हैं और चन्द शहर हैं। पर आज जैसे हालात हैं, उनको हम नजर अंदाज नहीं कर सकते। हम कितने ही अच्छे ढंग से देहातियों को समझावें और कितने ही अच्छे गीत गाकर उनको हम लुभाना चाहें, वह इस बात को भूल नहीं सकते कि आज जो ताकत देश में प्रभुत्व रखती है, वह शहरों तक ही महदूद है। और देहात की आवाज का देश के निर्माण में बहुत थोड़ा हिस्सा है। आज देश में यह जरूरत है कि देहात की जो धारा सभाओं की नशिस्तें हैं, वह अलहदा रखी जाएं, क्योंकि दरअसल अगर संरक्षण मिलना है और मिलना भी चाहिए, तो सिर्फ उन्हीं लोगों को मिलना चाहिए जो कि पिछड़े हुए हैं।

हम एक सैक्युलर स्टेट बनाना चाहते हैं और निर्धर्मी सरकार बनाने का हमारा ध्येय है, फिर उसको हासिल करने के तरीके में अगर हम सीटें कुछ सम्प्रदायों, रिलीजन्स के लिये संरक्षित कर दें, यह मेरी समझ में नहीं आता।

इससे जो यह स्वप्न है कि देश के अन्दर एक निरधर्मी सरकार बनावें, वह स्वप्न ही रह जाएगा... हां, यह बात कही जा सकती है कि हरिजन भाई पिछड़े हुए हैं। तालीम के लिहाज से और आर्थिक दशा के हिसाब से भी ये पिछड़ी हुई जाति कहे जा सकते हैं। हम देश के अन्दर एक क्लासलैस सोसाइटी बनाना चाहते हैं। पिछड़े हुए जितने आदमी हैं, वह या तो किसान हैं या मजदूर हैं। रशिया में जो मनुष्य हाथ से मेहनत नहीं करते थे और जो दूसरे ढंग से अर्थात रूपया से रूपया कमाते थे और जिनकी श्रम से कमाई नहीं थी, उनको डीफ्रैंचाइज कर दिया था। यहाँ यह न करें, उनको उनकी आबादी के हिसाब से पूरा अधिकार दे दें। लेकिन जो श्रम करने वाली जातियां हैं, किसान और मजदूर, उनके लिए हम सरंक्षण रखें। और अगर सरंक्षण देना है, तो उन्हीं आदमियों को देना है जो कि किसान हैं और मजदूर हैं और उन्हीं को यह सही तौर पर दिया जा सकता है।

इसके बाद मेरा नम्र निवेदन, जो कि एक किसान के नाते हो सकता है, वह गौरक्षा के बारे में है। गौवध के बारे में मैंने और पंडित ठाकुरदास भार्गव जी ने कांग्रेस पार्टी में एक प्रस्ताव रखा था और उस वक्त वह सर्वसम्मति से माना गया था, लेकिन यह बदकिस्मती की बात है कि उसका जिक्र हमारे कान्सटीट्यूशन में किसी तरह से भी नहीं आया है। हालांकि हिन्दी के बारे में भी ऐसी ही बात हुई थी। हिन्दी का जो फैसला था वह पार्टी के अन्दर हो चुका था, लेकिन वह भी इस हाउस के अन्दर नहीं आया। मैं चाहता हूं कि एक प्रस्ताव यहां आना चाहिए। मेरा यह नम्र निवेदन है कि उस रिजोल्यूशन को पूरे तौर पर माना जाए, बल्कि उसका विस्तार इस तरह कर दिया जाए:

"In discharge of the primary duty of the State to provide adequate food, water and clothing to the nationals and improve their standard of living the State shall endeavour

(a) as soon as possible to undertake the execution of irrigation and hydro-electric projects by harnessing rivers and construction of dams and adopt means of increasing production of food and fodder.

(b) to preserve, protect and improve the useful breeds of cattle and ban the slaughter of useful cattle, specially milch and draught cattle and the young stocks."

अध्यक्ष महोदय, एक और निवेदन मैं आर्थिक व्यवस्था के बारे में करना चाहता हूं। मुझे इसमें तो कोई एतराज नहीं है, बल्कि मुझे बड़ी खुशी है, कि सैन्टर बड़ा भारी मजबूत हो, लेकिन एक चीज, जो मैं निवेदन करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं वह यह है कि सूबों के फाइनेन्सेज भी मजबूत किये जाएं। आज एक किसान, जिसकी कमाई खून और पसीने की कमाई है, उसकी आमदनी का एक पाई भी ऐसा हिस्सा नहीं है जिसके ऊपर टैक्स नहीं लगता। एक बीघा भी जमीन अगर वह काश्त करता है तो उसके ऊपर टैक्स देना पड़ता है। इसके मुकाबले में भारत के दूसरे निवासियों की दो हजार तक की आमदनी पर कोई टैक्स नहीं लगता। यह किसान के साथ एक बहुत बड़ा अन्याय है। अगर एक ऐसे देश में जिसके अन्दर कि किसानों का प्रभुत्व है और जिसमें किसानों की इतनी बड़ी आबादी है, बल्कि यों कहना चाहिए कि जो देश किसानों का ही है, उसके अन्दर उनके साथ यह अन्याय जारी रहेगा तो यह कैसा मालूम देगा? इसलिए मैं यह चाहता हूं कि सूबे की सरकारें जमीन का जो लगान है, उसको भी इन्कमटैक्स के ढंग से लागू करें। इसके लिए उनके फाइनेन्सेज को मजबूत किया जाए।

एक दूसरीबातऔरयहकहनाचाहताहूंकिइसदेशकेआजादहोने सेपंजाबतकसीमहुआऔरपंजाबकेतकसीमहोनेसेसूबेकातमामकाम उथल-पुथलहोगयाहै।उसको फिर दोबारा दूसरेसूबोंकीबराबरलानेके लिए यह आवश्यक है कि कम से कम दस साल तक , जहां तक आर्थिक व्यवस्थाकाताल्लुकहै,ईस्टपंजाबकेसाथरियासतबरतीजाए।

भाषणकीसमाप्ति पर मैंनेउन्हेंखूब मुबारकबाद दी।बहुतसेऔर लोगोंनेभीमुक्तकंठसेभूरी-भूरीप्रशंसाकी। निसन्देह उनकायह भाषण हमारेइतिहासकीएकमहत्त्वपूर्णदस्तावेजहै।औरयहीअकेलाक्यों?उन केसंविधानसभाऔरअंतरिमलोकसभामेंगाँव,गरीबऔरपिछड़ेवर्गोंकी तरफदारीमेंदिएगएसभीभाषणस्वर्णअक्षरोंमेंलिखनेयोग्यहैं।

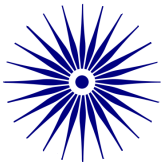

6
केन्द्रीय राजनीति में

भारत स्वतंत्र हो चुका था। संविधान भी बन कर लागू हो गया था। चुंकी संविधान सभा बनने के बाद केन्द्रीय असेम्बली और कौंसिल ऑफ स्टेट्स भंग हो गई थीं, अत: उनकी जगह संविधान सभा को अंतरिम लोक सभा में बदल दिया गया। चौधरी साहब उसके मेम्बर थे। सन् 1952 के आते-आते नई लोक सभा के चुनावों की चर्चा हवा में तैरने लगी थी। एक दिन, मैं दिल्ली में चौधरी साहब के मकान पर उन से मिलने गया। शाम का समय था। चाय पी ई। उनकी सैर का समय हो गया तो मुझे भी साथ ले लिया। लम्बी सैर की और उतनी ही लम्बी बातें हुईं, सेन्टर की राजनीति के विषय में, और न जाने कितनी ही बातों पर चर्चा हुई।

इस लम्बी चर्चा के दौरान उठी एक बात मुझे बड़ी अच्छी तरह से याद है। मैंने चौधरी साहब से पूछा: ''चौधरी साहब, सब काम हो गए, अब क्या करने का इरादा है?''

वह बोले, ''भई करने को तो बहुत कुछ है। बड़े-बड़े सपने हैं। पर सियासत बड़ी पेचीदा चीज है। थोड़े-से दिन की गति विधियों को देख कर, मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आगे आने वाले दिनों में हमारे जैसे लोगों के लिए कोई ज्यादा जगह, और ज्यादा क्या उतनी भी जगह जिस के हम हर तरह से

हकदारहैं,वहभीआसानीसेनहींमिलेगी।एकदौरखत्महोगयाहै,दूसरा दौर चलेगा। हमें उस दौर में अपनी जगह बनानी पड़ेगी। हमें खुद कुंआ खोदकरपानीपीनापड़ेगा।कोईदूसराहमारेलिएप्याऊनहींलगाएगा''।

इसकेबादथोड़ेरूकें,फिरबोले,''जन-सेवामेंलगूंगा-राजनीति बेशक माध्यम रहेगा। यह काम अपने गाँवों,अपने इलाके से शुरू करूंगा औरजितनीदूरईश्वरलेजाएगा,जाऊँगा''।

इसके बाद मैंने दूसरा प्रश्न किया,''सेन्टर में रहोगे कि प्रदेश में आओगे''?

उन्होंनेतुरंतजवाबदिया,''सेन्टरमें।वैसेदेखेंहाईकमांडऔरप्रदेश वालेक्याकहतेहैं?मेरीचलीतोसेन्टरमें।सेन्टरमेंरहकरमैंअपनेपिछड़ेक्षेत्र की,गाँव,गरीब,किसानकीज्यादामददकरसकताहूँ।सेन्ट्रललीडरशीप मुझेजानतीहै।किसानोंकेमसलोंपरमेरीरायलीजातीहै।मुझेहीपार्टीकी तरफसेबोलनेकेलिएकहाजाताहै।पंजाबमेंहालातअस्थिर-सेहैं।वहां ज्यादाकामनहींहोपाएगा''।

मैंनेकहा,''आपज्यादाजानतेहैं,हमेंतोइतनीसमझकहां?''वह हंसदिए,कुछबोलेनहीं।

बातकोविरामलगगया।उनकीकोठीनजदीकथीऔरमुझेगाड़ी पकड़नीथी,सोवहींराहसेहीउन्हेंनमस्कारकरकेस्टेशनकारास्तालिया।

थोड़े दिन बाद 1952 के चुनाव हुए। चौधरी साहब रोहतक से लोकसभाकेलिएखड़ेहुए।मैंचुनावकेदौरानउनकेसाथथा।मैंउन्हेंकुछ प्रोग्रामदेता,वहकुछकोलेते,कुछकोटालदेते।थोड़ेसमयबादमैंनेदेखाकि उनकोअपनेचुनावसेज्यादाइसबातकीफिक्रथीकिकांग्रेसकासबजगह अच्छाप्रदर्शनहो।

लगभगइसीसमयपंजाबविधानसभाकेचुनावथे।हरियाणाक्षेत्रमें, यद्यपिचौ. छोटूराम नहींरहेथे(उनकी1945 मेंमृत्युहोगईथी) ,उनकी पार्टी,युनियनिस्टपार्टी,जिसेगाँवोंमेंजमींदारलीगकहतेथे,अबभीबाकी थी। उसके कुछ पुराने-नए नेता चुनाव को बिगाड़ सकते थे। अत: पंजाब नेतृत्वनेएक दिनचौधरीसाहबकोबुलाकरकहा कि, ''चौधरीसाहबआप के यहां युनियनिस्ट पार्टीकीजड़ेंकाफीपुरानीऔर मजबूत हैं। कुछ वोट खराबहो सकते हैं। क्योंन आप वहां से पढ़े-लिखे अच्छे लोगों को अपने साथलेलो''?

चौधरी साहब ने कहा, ''इसमें कोई हर्ज नहीं। पश्चिमी पंजाब (पाकिस्तान) मेंइसपार्टीकेनेतामुस्लिमलीगमेंमिलगएहैं।यहांकांग्रेसमें आएं तो हमें क्या उज्र हो सकता है। कल तक हम युनियनिस्टों के साथ मिलकरखिज्रहकूमतकोचलाहीरहेथे।※ ''

इतनाकहकर,चौधरीसाहबरोहतकआए।मुझेबुला लिया।चौधरी साहब नेमुझे साथ लिया और हम सीधे चौधरीटीकाराम के पास गए। चौ. टीकारामचौ. छोटूरामकीमृत्युकेबाद पंजाबमेंमंत्रीरहेथे।हरियाणामेंतब युनियनिस्ट पार्टीकेसबसेबड़े नेता थे। उन्होंनेकहा, ''ठीक है। मैंसब को इकटठ्ाकरकेफैसलालेलेताहूं।''

चौ.टीकारामनेतीन दिनबाद सोनीपतमेंमीटिंगबुलाई।चौ.श्रीचंद, चौ. रामस्वरूप,राव मोहर सिंह,चौ. रिजकराम आदि कई नेता मीटिंग में आए। फैसला कांग्रेस में विलय का होनेवाला ही था कि चौ. रामस्वरूप ने

※ 1946 के चुनावों में युनियनिस्टों को पंजाब विधानसभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला था। सबसेबड़ीपार्टीमुस्लिमलीगथी,परउसकेपासभीबहुमतनहींथा।अत:युनियनिस्टऔर कांग्रेसनेमिलकरसरकारबनाई।यहथोड़े दिनहीचली।

कहा,''नहीं,हमचौ.छोटूरामकीविरासतकोयोंखत्मनहींकरसकते''। बातउल्टीदिशामेंमुड़गई।

मीटिंगवालेदिनचौधरीसाहबऔरमैंसोनीपतमेंहीथे।रातकोहम चौ. रिजकरामकेघरठहरे। चौधरीसाहबनेचौ. रिजकरामकोकांग्रेसमें शामिलहोनेकेलिएमनालिया।दूसरेदिनउन्होंनेअपनाफैसलाअखबारों केमाध्यमसेसुनादिया।चुनावहुए।चौ. रिजकरामजीतगए।लगभगसभी युनियनिस्टलीडरबुरीतरहसेहारे।

चौधरीसाहबनेअपनाचुनाव(लोकसभाका)साफ-सुथरेढंगसे लड़ा।उनकीख्यातिएकदेशभक्त,गरीब-हितैषी,सीधे-सच्चेव्यक्ति कीथी।अत:मुहीमअपने-आपचलनिकली।मैं,जैसेऊपरकहआयाहूं, सारेसमयवहींरहा।बड़ेअच्छेवोटोंसेचौधरीसाहबविजयीरहे।

1955मेंकांग्रेसकामहाअधिवेशनअमृतसरमेंकरनेकाफैसला किया गया। उस समय मास्टर तारा सिंह के कहने पर अकाली लोग बार-बारपंजाबीसूबेकीमागंकररहेथे।अपनीशक्तिकाप्रर्दशनकरनेके लिएमास्टरतारासिंहनेभीउन्हींतिथियोंमेंअकालीअधिवेशनकीघोषणा करदी।उससमयमुख्यमंत्रीभीमसैनसच्चरथे।प्रतापसिंहकैरोंसेउनकी बनतीनहींथी।कैरोंसाहबकाभीपार्टीऔरसरकारमेंकाफीबड़ागुटथा। अधिवेशनसेपहलेस्वागतसमितिकेमेम्बरबननेथेजिनकीफीस100 रूपयेथी। स्वागत समिति में जिस नेता का वर्चस्व होता था वह ज्यादा प्रभावशाली गिना जाता था। अत: सच्चर साहब चाहते थे उस में उनके आदमीज्यादारहें।कैरोंसाहबअपनेआदमीचाहताथा।

कैरोंसाहबउससमयमुख्यमन्त्रीतोनहींथे,परएकलोकप्रियमंत्री थे।उन्होंने1952केबादइतनीमेहनतऔरलग्नसेकामकियाकिपंजाबकी जनतामेंबड़ेपापुलरहोगए।उन्होंनेपांचसालमेंसारेपंजाबकेकिसानोंकी

जमीनकीचकबंदीऐसेतरीकेसेकराईजिससेकोईकर्मचारीरिश्वतनले सके। उन्होंनेहर गांव में उसी गांव के किसानों की कमेटियां बना दीं और तहसीलदारोंकोकहा कि गांव-गांवमेंइसकमेटीकीसलाहसेहीउसगांव की चकबंदी का विधान बनाएं। जमीनों की कीमत भी वह कमेटी ही तय करती थी। किस्सा कोताह, कैरों साहब ने गांव की उन्नति के लिए काफी कदमउठाए,जिससेवहकाफीजनप्रियहोगए।

भीमसैनसच्चरकोसंदेहहोगया किकहींरिसैप्शनकमेटीपरप्रताप सिंह कैरों ग्रुप कब्जा न कर ले। अत: उन्होंने इस संदर्भ में प्रबोध चंद्र से, जो मुख्यसंसदीयसचिवथेऔरऔरसच्चरग्रुपकेप्रवक्ताथे,एकबयानदिला दिया कि रिसैप्शनकमेटीकाअध्यक्षसच्चरसाहबबनाएंगे।कैरोंसाहबने चुनावका रूल दिखा दिया। सच्चर साहब के आदमी इसके लिए भी तैयार थे।उन्होंनेखासेमेम्बरबनारखेथे।

उन्हें चौधरी रणबीर सिंह के विषय में पता नहीं था कि उन्होंने भी इस मामले में काफी मेहनत कर रखी है। असल बात यह थी कि उन्होंने गांव-गांवघूमकरस्वागतसमितिकेलिएसौ-सौरूपयेकेबहुतसारेमैम्बर बना लिएथे।प्रबोधचंद्रजीऔरसच्चरसाहबकोयहख्यालथा कि सिखतो मेम्बर बनेंगे नहीं क्योंकि वह तो अकाली हैं, इसलिए बहुमत उनका ही रहेगा।लेकिनचौधरीरणबीरसिंहनेइसख्यालकोगलतसाबितकरदिया।

स्वागत समिति के चुनाव के समय चौधरी रणबीर सिंह ने चौ. सुलतान सिंह (झज्जरवाले), जिनकीरोहतक-झज्जरबससर्विसथी,से बसेंलीऔरसबमेम्बरोंकोरात-रातमेंअमृतसर पहुंचा दिया। उनकेसारे मेम्बरअमृतसर 'इन्द्र निवास 'मेंइकटठ्हुए।चौधरीसाहबकैरोंकेसाथथे। सुबहजबचुनावहोनाथातोसबपंडालपहुंचगए।वहांकैरोंसाहबनेगुरमुख सिंह मुसाफिर का नाम अध्यक्षता के लिए पेश किया। दुर्गादास भाटिया ने

ताईदकीऔरहमसभीलोगोंनेतालियाबजानीशुरूकरदी।सच्चरसाहब स्थितिकोसमझगए।सरदारप्रतापसिंहकैरोंनेसच्चरसाहबसेकहा कि, ''सच्चरसाहबआपमुकाबलेमेंकोईनामपेशकरना चाहतेहैं?''सच्चर साहबनेकोईनामपेशनहींकिया।गुरमुखसिंहमुसाफिरनिर्विरोधअध्यक्ष चुनेगए।यहप्रतापसिंहकैरोंकीबहुतबड़ीजीतथी।

गुरमुख सिंह मुसाफिर ने चौधरी रणबीर सिंह को जनरल सैक्रेट्री बनाया और कांग्रेस अधिवेशन की तैयारी की जिम्मेदारी उनके जिम्मे लगाई। वह अधिवेशन बड़ा कामयाब रहा, जिसका श्रेय काफी हद तक चौधरीसाहबकोगया।

कांग्रेसअधिवेशनकेदौरानदोप्रदर्शिनयांलगाईगईं- एककृषिकी, दूसरीखादीकी। चौधरीसाहब कीवजह सेदोनोंप्रर्दशनियांहरियाणा के लोगोंनेलगाईं- कृषिकीडॉ.रामधन सिंहनेलगाईऔरखादीकीभीमसैन विद्यालंकार ने। डॉ. रामधन बहुत बड़े कृषि वैज्ञानिक थे। भीमसैन चौधरी मातुराम के मित्र चौ. पीरू सिंह (मटिंडू) के भाई चौ. श्योकरण के पुत्र थे। खादीकेक्षेत्रमेंबड़ाकामकिया।

अमृतसर में उन दिनों चौ. रणबीर सिंह के नजदीकी रिश्तेदार चौ. रामसिंह एस.पी. थे। नेहरू जीनेउनसेपूछा कि हमारे अधिवेशन केदौरान अकालीझगड़ातोनहींकरेंगे।चौधरीरणबीरसिंहनेउन्हेंपहलेहीकह दिया था कि हो सकता है नेहरू जीआप से कुछ पूछेंतो आप उन से कहना कि, ''झगड़े का अंदेशा है, लेकिन मैं अमन रखने की पूरी कोशिश करूंगा वैसे अगर झगड़े से सदा के लिए बचना चाहते हो तो सरदार प्रताप सिंह कैरों, जो अमृतसर जिलेसेहैंऔरसिखजाटभीहैं(जोइसइलाकेमेंशक्तिशालीहैं), उन्हेंमुख्यमंत्रीबना दें। इस से मास्टर तारा सिंह की कमर टूट जाएगी, और कभीकोईझगड़ानहींकरेगा।''रामसिंहनेयहीकह दिया।

यहबातपंडितजवाहरलालजीकोपसंदआई।उन्होंनेसच्चरसाहब कोबुलाकरइस्तीफामांग लियाऔरप्रताप सिंह कैरोंकोबुला भेजा।प्रताप सिंह कैरोंजवाहरलालजीसे मिलनेगएतोचौधरीरणबीर सिंहउनकेसाथ थे।पंडितजीनेकहा कि,''प्रताप सिंहतुमपंजाबकोसंभालो।''प्रताप सिंह नेकहा कि,''पंडितजी,जबतक मुझेमौलानाआजादकाआशीर्वादनहीं मिलता,मैंपंजाब नहींजाऊंगा,क्योंकि मौलानाआजाद,सच्चर साहबसे बहुतप्यारकरतेहैं,अत:होगा यह कि पंजाब जाकरमैंअपनी बिरादरीसे लडूंगा और जब फिर अमन-शांति हो जाएगी तब मौलाना साहब फिर सच्चर साहब को ले आएंगे। मैं जिस हालत में हूं उसी हालत में रहने दीजिए।''

पंडितजीनेकहा कि,''तुममौलानासाहबकेपासजाओ''।प्रताप सिंह कैरोंमौलाना साहबकेपासगए।मौलाना साहबबहुतऊंचेइंसानथे। व्यवहारीनेताथे।उन्होंनेकैरोंसाहबसेकहा,''मेरेभाईप्रताप सिंह,मैंसब कुछ समझ गया हूं।अब जाओ,पंजाब संभालो,मैंपूरीतरह आपकेसाथ रहूंगा''।औरइसप्रकारप्रतापसिंहकैरोंपंजाबकेमुख्यमंत्रीबने।

कैरोंसाहबकेमुख्यमन्त्रीबननेमेंदोबातोंनेकाम कियाऔरदोनोंसे चौधरीरणबीर सिंह का वास्ता था।एक स्वागत समिति द्वारा मुसाफिर का अध्यक्षचुनाजाना,औरदूसराचौ.राम सिंहकीरिपोर्ट।दोनोंहीकामचौधरी रणबीर सिंह नेकरवाए।कैरोंका मुख्यमंत्रीबनना पंजाबऔर देश के लिए बड़ाफायदेमंदरहा।

दूसरे चुनावों में भी, 1957 में, चौधरी साहब फिर रोहतक पार्लियामेंटरीहल्केसेलड़े।वहीस्थितिरही।बड़ेअच्छेमतोंसेविजयीरहे। इन दिनोंमेंकईबारचौधरीसाहबकेभाषणसुननेलोकसभा चला जाताथा। गाँवोंकेमसलोंकोबड़ीबारीकीसेउठातेथे।किसानकेदु:ख-तकलीफों

कीसतरंगीतस्वीरखींचकरसबकोप्रभावितकरलेतेथे।अपनेइलाकेकी समस्याओंपरभीखूबबोलतेथे।

1960मेंचौधरीसाहबदिल्लीसेरोहतकजारहेथे।इस्माइलागांव केपासहादसाहोगया।उनकोबहुतज्यादाचोटेंआईं।वहदो-तीनदिनतक रोहतक हास्पीटल मेंरहे,उसके बाद विलिंगडन हास्पीटल दिल्लीभेज दिएगए। विलिंगडनहास्पीटलमेंपं.जवाहरलालजीउनकोदेखनेआए। पंडितजीनेमजाकमेंकहा,''जाटकोकुछटकरानेकोनहीमिलातोट्रकसे टकरागया।''चौधरीरणबीर सिंह खिलखिला कर हंस पड़े। पंडित जीने डाक्टरोंसेबातकी।औरजल्दीसेसेहतयाबहोनेकीकामनाकरकेचलने लगेतोचौधरीसाहबनेउन्हेंरोकाऔररोहतककेबाढ़मेंडूबनेकीबातकही। उन दिनोंड्रेन नंबर-8 टूटकर फैल गईथी जिसके कारण समूचा रोहतक शहरडूबगयाथा।रोहतक-गोहानासड़कपूरीतरहकई-कईफूटपानीमें डूबगईथी।सारेइलाकेकाबुराहालथा।चौधरीसाहबनेकहा,''पंडितजी, मेरासाराजिलापानीमेंडूबाहुआहैऔरमैंजानेकीपोजिशनमेंनहीहूं।क्या करूं?''पंडितजीनेकहा,''मैंजाऊंगा।''चौधरीसाहबनेउनकाशुक्रिया अदाकिया।औरउन्होंनेमेरीड्युटीलगाईकिमैंपंडितजीकेसाथजाऊं।मैं जिलाकांग्रेसकाअध्यक्षथा।पंडितजीनेकहा,''ठीकहैसुलतानसिंहको कलमेरेपासभेजदेना।''

पंडितजीकाहवाईजहाजसेदौराहुआ।मैं,प्रतापसिंहदौलता(एम. पी.),हाफिजमोहम्मदइब्राहिम,जनरलथापरऔरजनरल विक्रम सिंह हवाईजहाजमेंउनकेसाथगए।पंडितजीनेढांसाबाधंसेलेकरपूरीड्रेननंबर 8काऊपरसेनिरिक्षणकिया।

रोहतक शहर पूरीतरह से डूबा हुआ था। ड्रेन नंबर8 के दोनों तरफ दो-दोतीन-तीन किलोमीटरतक पानीहीपानीथा।चौधरीरणबीर सिंह ने

मुझेचलनेसेपहलेसमझा दियाथा कियहपानीनाईनालासेचलकरगोहाना कीरोढ़ाझीलमेंआताहैऔरउसकेबादरोहतक,बेरी,जहाजगढ़होताहुआ भिंडावासझीलऔरउससेआगेझज्जरसेऊपरहोकरमोहनबाड़ीपहुंचता है।यहांरेवाड़ीकीतरफसेसाहबीका पानीभीआ जाता है और ढासा बांध तक सारेगांव पानीमेंडूब जातेहैं।पंडितजीकोएकहीबात बताना कि यह पानीअगरगोहानासेड्रेन निकालकरयमुनामेंडाल दियाजाएतोबाकीसारा इलाकाबचसकताहै।

पंडितजीपानीकोदेखतेहुए चले।काफीसमयलगाया।मैंनेसंक्षेप मेंसबबातेंकही।हवाईजहाजसेउतरतेवक्तपंडितजीनेहा फिजसाहबको कहा कि इनकीपूरीबातेंसमझो।मैंनेउन्हेंसब बातें विस्तारसेबता दीं।बाढ़ नियंत्रणपरपंजाबकौंसिलमेंबहसपरबोलतेहुएइस विषयपरप्रस्तावभी मैंनेप्रस्तुत किया।उसमेंचौधरीसाहबनेजोकहाथावहशामिलकर दिया गयाथा।

अपनीदो लोक सभा कीपारियों में चौधरीसाहब ने अपने प्रदेश, अपनेइलाकेऔरअपनेलोगोंकीउन्नति के लिएजोकाम किए-करवाए वहस्वर्णअक्षरोंमेंलिखनेयोग्यहै।

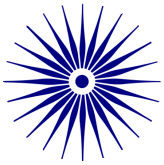

7
प्रांतीय राजनीति और जन-सेवा

मुख्यमंत्रीबननेकेबाद सरदार प्रताप सिंह कैरोंचौधरीसाहब सेहरबात में सलाह मश्विरा करते थे। वह उन्हें अक्सर कहते भी रहते थे कि, ''भाई रणबीर सिंह,आपअपनेप्रांतमेंआजाओ''।मुझसेभीचौधरीसाहबनेकई बारइसबातका जिक्र किया।मैंभीचौधरीसाहबसेयहीकहता,''हांठीक तोहै,आजाओ''।

1962मेंचौधरीसाहबकाघरकीओरमुड़नेकासमयआया।चुनावों कीघोषणाहोगई।कैरोंसाहब दिल्लीगएहुएथे।वहकर्जनरोड परठहरेहुए थे।उन्होंनेचौधरीसाहबसेमजाकमेंकहा,''रणबीर सिंहक्यातुम दिल्ली मेंहीरहोगे?मेरेसाथकामनहींकरना?

''चौधरीसाहबबोले,''मैंतोआपकेसाथहीकामकरताहूं''।

प्रताप सिंहकहनेलगे,''नहींभाई,मैंचाहताहूंकि तुमपूरीतरहमेरे साथआजाओ।1962केएसैम्बलीके लिएचुनावलड़ोऔरमंत्रीबनकर मेरे साथ काम करो''।

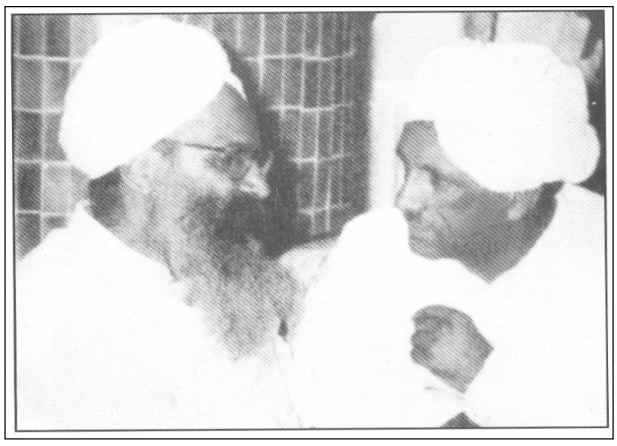

चौधरीसाहबप्रतापसिहंकैरोंकेसाथ

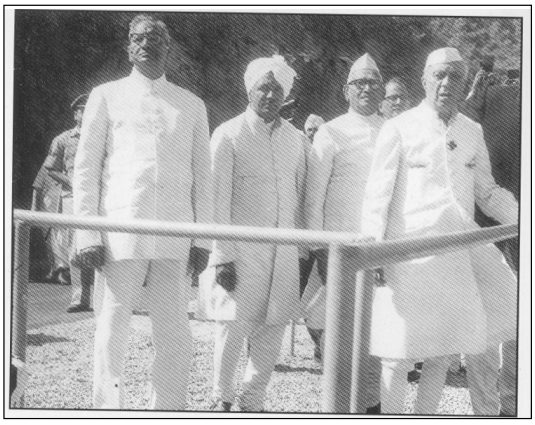

चौधरीसाहबप.ंजवाहरलालनेहरूकेसाथ
भाखडाकेलोकार्पणपर

चौधरीसाहबनेहांकरदी।हल्काकलानौरसेचुनावलड़े।जीतके बाद सिंचाईव बिजलीमंत्रीबने। उन्होंने खूब सोच समझकर यह महकमे लिएथे।अपनेइलाकेके लिएउन्होंनेइनमहकमोंद्वारा,खासकर सिंचाईके महकमेकेजरियेबहुतबहुतकाम किया।

भाखड़ाबांधबनवानेमेंउन्होंनेबहुत दिलचस्पीली।भाखड़ानहर, जो मुख्यत: हमारे इलाके के लिए थी, उसे जल्दी करके मुकम्मिल करवाया।औरकईनहरेंबनवाईंऔर सिंचाईकीस्कीमेंसिरेचढ़ाईं।पंजाब मेंसिंचाईमंत्रीबहुतहुएपरचौधरीसाहबजितनाकाम किसीनेनहींकिया।

एक ऐतिहासिक बात की चर्चा के बिना यह विवरण अधूरा रहेगा। भाखड़ाबांधमेंचौधरीछोटूरामकीबहुतज्यादा दिलचस्पीथी।उन्होंनेइसे शुरू करानेमेंबड़ीमेहनतकी। भाखड़ा बांध के लिए भूमि बिलासपुर की रियासत सेलेनीपड़ीथी। बड़ीरूकावटेंआईं। लेकिन चौधरीछोटूराम ने किसीतरहसेउन्हेंपारकरहीलिया।पंजाबसरकारऔर बिलासपुरकेबीच अंतिमफैसलेकीफाइलपरचौ. छोटूरामने15जनवरी1945कोअपनेघर पर, बीमारीकीहालत मेंहस्ताक्षर किए। यह आखरी फाइल थी जिस पर उन्होंनेहस्ताक्षरकिए।दूसरेदिनउनकादेहान्तहोगया।

इसप्रकारहरियाणाकेएकमहाननेता,चौधरीछोटूरामनेअपनेमंत्री कालमेंभाखड़ा-बांधके निर्माणकाफैसला लिया।औरसुनहरीइत्तफाक देखिए, हरियाणा के एक दूसरे महान नेता, चौ. रणबीर सिंह ने, अपने मंत्री कालमेंउसेपूराकिया।

चौधरी साहब ने पंजाब में मंत्री बनने पर रोहतक की बाढ़ का पूर्ण इलाज करने का प्रयत्न किया। उन्होंने पहले ड्रेन नंबर 8 को खुदवाया। जसिया, ब्राहामणवासवगैराके पानीकीनिकासीके लिएएक ड्रेनखुदवा कर पीर भाऊदीमेंजोड़ी। गोहानाके पाससेइस्सापुराखेड़ीड्रेन निकाली।

वह दुभेटा से कटवाला होती हुई ड्रेन नंबर आठ में मिली। रिठाल गांव, जिसकी कभी जमीन नहीं बोई जाती थी, उससे ड्रेन निकालकर आसन, कन्साला के पास से लेकर बड़ी ड्रेन में डाली। इस तरह छोटी-छोटी ड्रेनें निकालकर बाढ़का पूराइंतजाम किया।

एक समस्या और उनके विचाराधीन थी, लेकिन उसे पूरा नहीं कर पाए। हमारे बहुत सारे इलाके का सिंचाई का पानी भालौट ब्रांच के कन्हेली हैड पर इकटठ्ा होता है जो रोहतक शहर के साथ है। कन्हेली हैड से ही कलावड़,सांपला और बहादुरगढ़ तक यह पानी दुल्हेड़ा शाखा से जाता है। इसी प्रकार बेरी और उससे आगे मातनहेल, अकेहड़ी मदनपुर, वगैरा की तरफ जाता है। चौधरी साहब बार-बार नहर के अफसरों को कहा करते थे कि इस पानी को कन्हेली हैड पर इकटठ्ा करने की बजाए कलोई हैड से एक राजबाहा, जो अस्थल बोहर के पूर्व की तरफ जाता है, कि कुछ गांवों का पानी उसको बड़ा करके दुल्हेड़ा शाखा में डाला जाए। इसी तरफ एक और राजबाहा भालौट, बलियाणा, अटायल होता हुआ रोहद गांव की सीमा में खत्म होता है। सांपले से आगे गांवो का और बहादुरगढ़ का पानी उससे ले जाया जाए तो कन्हेली हैड पर पानी का दबाव कम हो जाएगा। मैं महसूस करता हूं कि अगर यह बात पूरी हो जाती तो इसके बड़े फायदे रहते और नहर में बच्चे रोज-रोज नहीं डूबते। चौधरी साहब को समय थोड़ा मिला इस लिए वह यह कार्य पूरा नहीं कर पाए। उनके बाद किसी ने इस बारे में सोचा ही नहीं।

चौधरी साहब ने उस समय यमुना नदी का भी उद्धार करने के खूब प्रयत्न किए। आज आप देख रहे हैं कि यमुना एक पवित्र नदी की बजाए गंदा नाला बन गई है। इसमें यमुनानगर, करनाल, पानीपत, सोनीपत से कैमिकल गिरते हैं। उसके साथ-साथ बहुत सारी जगह सीवर का पानी भी यमुना में ही आता है। यमुना एक ऐसी नदी है जिस पर, तीन तरह की 'राजधानियां' हैं:

दिल्ली राजनीतिक राजधानी है, मथुरा-वृंदावन धार्मिक राजधानी है, जहां भगवान कृष्ण ने जन्म लिया और यमुना के किनारे खेले, और इसी प्रकार आगरे में ताजमहल की वजह से पर्यटक राजधानी है। सैलानी यहां ताजमहल देखने आते हैं तो अपने नाक पर रूमाल रखना पड़ता है क्योंकि यमुना से बदबू आती है। वृंदावन में यमुना स्नान के बाद तुरंत स्वच्छ जल से नहाना पड़ता है। यही हालत दिल्ली में है। जिस यमुना के किनारे लाल किला, मैटकाफ हाऊस, फिरोजशाह कोटला, जैसी इमारत और जिसकी गोद में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सो रहे हों, वहां यमुना बदबूदार हो, यह पाप है।

मुझे याद है कि चौ. रणबीर सिंह के सिचाई मंत्री बनने के बाद गंगा बेसिन के मंत्रियों की एक कान्फ्रेंस डॉ. के. एल. राव, तत्कालीन केंद्रीय सिंचाई मंत्री की अध्यक्षता में नैनीताल में हुई थी। उस कान्फ्रेंस में मैं भी शामिल था। बंगाल से अजय मुखर्जी और प्रणव मुखर्जी भी आये थे। उस मीटिंग में चौ. रणबीर सिंह ने यमुना पर बांध बनाने का प्रस्ताव रखा। यमुना नदी में एक छोटी नदी किसाऊ में आकर गिरती है। उस बांध का नाम उन्होंने ही किसाऊ डैम दिया था। यह प्रस्ताव पारित हो गया। इसके साथ उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली और राजस्थान का पानी का हिस्सा भी तय हो गया और किसाऊ डैम सर्वेक्षण तथा उस पर लागत का पूरा प्रौजेक्ट भी निश्चित हो गया। डॉ. के. एल. राव ने, जो स्वयं बहुत बड़े इंजीनियर थे, प्रोजैक्ट की मंजूरी दे दी। दुर्भाग्य से चौधरी रणबीर सिंह इस महकमें के 1964 में मंत्री नहीं रहे और यह प्रोजैक्ट कागजों में ही दबकर रह गया।

चौधरी साहब पंजाब में मंत्री रहते हुए भी हरियाणे के हितों की बड़ी पैनी नजर से रखवाली करते थे। उस समय भाखड़ा और भाखड़ा कैनाल पर चार पावर हाऊस थे। दो तो मेन बांध पर थे, जिनका निर्माण गंगवाल और कोटला भाखड़ा मेन कनाल पर हुआ था। गंगवाल में पानी नीचे गिराकर

बिजलीपैदाकीजातीथीवहीपानीआगेमेनलाइनमेंआजाताथा।इसीतरह सेकोटलापावरहाऊसथा।यहसबपानीहरियाणामेंआताथा।

कुछइन्जीनियरोंनेरोपड़मेंएक नएपावरहाऊसकीयोजनाबनाई। इसमेंभाखड़ामेनलाइनसेपानीगिरकरसरहिन्दकैनालमेंजानाथा जिससे हरियाणेमेंपानीकाघाटाहोता।चौधरीसाहबनेइसयोजनाकोमंजूर नहीं किया।हरियाणाअलगहोनेकेबादहीयहपावरहाऊसबना।

चौ. रणबीर सिंह के मंत्रिकाल में दो बड़े प्रोजेक्ट चले, जिनका वह बार-बार निरिक्षण करते रहे, क्योंकि इन दोनों प्रोजेक्टों से हरियाणे के हित जुड़े हुए थे। पाण्डव प्रोजेक्ट, जो अब हिमाचल प्रदेश में है, इसके अंतर्गत ब्यास नदी का रूख मोड़ कर दो बड़ी-बड़ी सुरंगें और सुन्दर नगर की वैली में खुली नहर बनाकर उन्हें सलापर में सतलुज में डाला गया जिससे बिजली और पानी दोनों की बढ़ोतरी हुई। बटवारे के समय उससे भी हरियाणे को हिस्सा मिला। इसके अतिरिक्त, ब्यास नदी पर तलवाड़ा (पौंग) बांध बन रहा था जिसका भी वे तेजी से कार्य कराने के लिए बार-बार निरीक्षण करते थे।उसडैमसेजोबिजलीऔरपानीबढ़ाउसमेंभीहमाराहिस्साहै।पानीऔर बिजलीकीमेनलाइनेंआजभीभाखड़ाब्यासमैनेजमेंटबोर्डकीदेखरेखमें हैं।

1966मेंहरियाणाबनातोचौधरीसाहबयहांआगए।यहांभीमंत्रीरहे और खूब काम किया। यहां हरियाणा बनवाने में उन का क्या रोल था इस विषयमेंभीएक-दोबातेंपाठकोंसेसाझाकरनाचाहूंगा।संविधानसभामेंमैं उसरोज(18.11.1948)हाजिरथा।उन्होंनेहरियाणाराज्य के बनने की खूबवकालतकी।गांधीजीद्वारागोलमेजकांफ्रेंस(1931)मेंइसमांग के समर्थनकीचर्चाकरतेहुएउन्होंनेबड़ेहीजोरदारढंगसेअपना,याकहिए हरियाणाकापक्षरखा।

स्वतन्त्रता के फौरन बाद राज्यों के पुर्नगठन की मांग जोर पकड़ने लगी। कई जगह स्थिति खराब हो गई। सरकार ने इन गतिविधियों को देखते हुए राज्य पुर्नगठन कमिशन मुकर्र किया। जस्टिस फजलअली उस के अध्यक्ष थे। जब यह कमिशन रोहतक में आया तो चौ. रणबीर सिंह ने बड़े सशक्त ढंग से हरियाणा को पंजाब से अलग करने की बात कही।

जब पंजाब के पुर्नगठन के लिए सरकार हुकम सिंह की अध्यक्षता में पार्लियामेन्टरी कमेटी बनाई गई, उस समय पंजाब के मुख्यमंत्री कामरेड राम किशन थे और पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष पं. भगवतदयाल शर्मा थे। कामरेड राम किशन ने कैबिनेट मीटिंग में कहा कि पंजाब का बंटवारा नहीं होना चाहिए। चौ. रणबीर सिंह ने मंत्रीमंडल के सदस्य होते हुए भी कहा कि मुख्यमंत्री जी मैं आपकी बात से सहमत नहीं हो सकता। मेरी राय है कि हरियाणा पंजाब प्रदेश से अलग होना चाहिए।

पं. भगवतदयाल शर्मा ने पंजाब कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई। उनमें भी चौ. रणबीर सिंह ने खुलकर हरियाणा का समर्थन किया।

अंत में आप ने हुकम सिंह कमेटी के सामने बयान दिया कि हरियाणा जरूर बनना चाहिए। बंटवारे के दौरान हरियाणा के हितों की खूब रक्षा की। अबोहर–फाजिल्का के सको हरियाणा के हक में ऐसे पेश किया कि जिसने देखा–सुना खूब तारिफ की।

हरियाणा के अलग राज्य बनने पर आप यहां मंत्री बने। यहां अपने खट्टे–मिट्ठे अनुभवों को आप ने अपने संस्मरणों में बड़े विस्तार से बताया है। मैं उन्हें दोहराना नहीं चाहता, और केवल इतना कहकर इस प्रकरण को समाप्त करता हूं कि हरियाणा की तत्कालीन स्थानीय राजनीति में आपको कतई स्वाद नहीं आया।

पुनः केन्द्र की ओर

1972 में चौधरी साहब फिर सेन्टर की तरफ मुड़े। उन्होंने हरियाणा का राज्यसभामेंप्रतिनिधित्व किया।मैंभीइन दिनोंकाफीसमयतक,राज्यसभा में उनके साथ रहा। दोनों मिलकर अपने प्रदेश की समस्याओं पर विचार करतेथे,फिरबारी-बारीउनपरबोलतेथे,प्रश्नपूछतेथे,लोबिईंगकरतेथे। बड़ेअच्छे,भलेदिनथेवे।चौधरीसाहबसेमुझेसदैवस्नेहवइज्जतमिली।

मैं,जैसा किऊपर कहआयाहूँ,उन्हेंअपना'सेनापति'मानताभीथा और कहता भीथा। इस पर उनकी वही पुरानी प्रतिक्रिया होती- ''नहीं, जन-सेवक''! मैंहंसकर कहता- ''हां जन-सेवक सेनापति''।वह भी हंसदेते।

सही जन-सेवक

चौधरीसाहबसहीमायनोंमेंजन-सेवकहीथे।1978में,जबराज्यसभाका कार्यकालसमाप्तहुआतोमैंनेपूछा:''चौधरीसाहब,अब?

उत्तरथा,''बसभईसुलतान सिंहऔरराजनीतिनहीं।अपनेमनका कामकरेंगे-जन-सेवा,विशुद्धजन-सेवा।''

मैंनेकहा,''परचर्चातोकुछऔरहीहोरहीहै।दूसरीटर्मकाफैसला होगयाहै-पक्कासमझो।''

उन्होंनेबातकाटतेहुएकहा,''हां,ठीकहै।परमैंनेमनाकर दियाहै। राजनीतिनहींबस,दूसराकामकरेंगे।''

इसके बाद,जीवनप्रयन्त वह पूर्णकालीक जन-सेवा में लग गए। दूसरा महत्वपूर्णकाम उन्होंनेये किया कि बूढ़े हो चले स्वतन्त्रता सेनानियों की सेवा की,उन्हें सम्मान पेंशन दिलवाई,और उनकी दु:ख तकलीफें दूर की।

जन–सेवा करते–करते, 1 फरवरी 2009 को चौधरी साहब परलोक सिधारे। उन्होंने बड़ा शानदार जीवन जिया। सदा देश, गरीब, किसान,मजदूर,पिछड़ोंकीसेवाकरतेरहे।

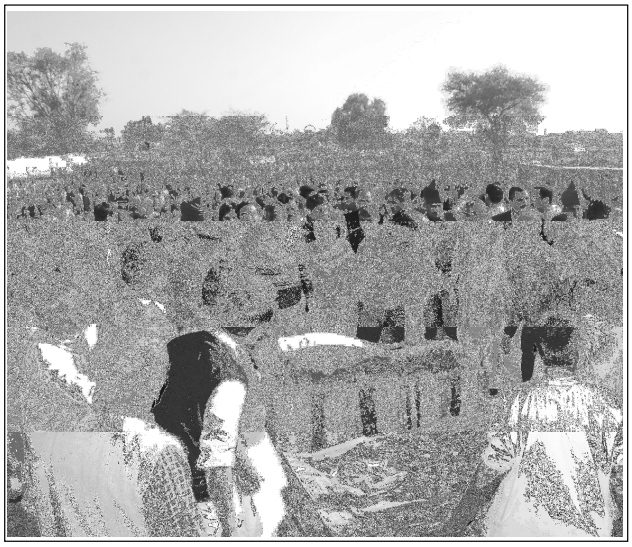

स्वतंत्रतासंग्रामकेमहायोद्धाकीअन्तिममहायात्रा।12फरवरी2009कोउनकापूरेराष्ट्रीयसम्मानके साथसंविधानस्थल,रोहतकपरअंतिमसंस्कारकियागया।

श्रीभूपेन्द्रसिंहहुड्डा,मुख्यमन्त्रीहरियाणाअपनेपूज्यपिताजीकी अस्थियांभाखड़ामेंविसर्जितकरतेहुए।(4फरवरी2009)

भाग3 :व्यक्तित्व

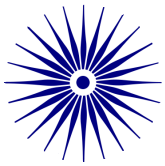

8
व्यक्तित्व

चौधरी रणबीर सिंह के जीवन तथा कार्यों के बारे में चर्चा करने के बाद अब उनके व्यक्तित्व के बारे में थोड़ा देख लें। यदि मुझे कोई चौधरी साहब के व्यक्तित्व के बारे में एक वाक्य में सब कुछ कहने के लिए कहे तो मैं कहूंगा कि वह उदार और उच्च व्यक्तित्व के धनी थे। अपने कथन की पुष्टि हेतु कुछ उदाहरण नीचे देरहा हूं।

राजनैतिक नैतिकता

हरियाणा बनने के बाद मुख्यमंत्री बनने की बात चली। उन दिनों यह रिवाज था कि जो प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष होता वह ही मुख्यमंत्री बनता था। अत: चौधरी रणबीर सिंह के साथियों ने कहा कि आप सबसे सीनियर हैं, आप कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के लिए खड़े हो जाइए। चौधरी रणबीर सिंह बोले कि आज हरियाणे में उमर और कुर्बानी के लिहाज से खान अब्दुल गफ्फार खान सबसे वरिष्ठ हैं। खान अब्दुल गफ्फार खान जिला अम्बाला के एक बहुत बड़े मुस्लिम राजपूत परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट थे। इसके अलावा वह बड़े जागीरदार भी थे। उन्हीं का भांजा राव

फरमान अली पाकिस्तान की फौज में जनरल था। मतलब, बड़े नामी खानदानसेथे।इसकेसाथही,खानसाहबआजादीकीलड़ाईमेंहमेशाजेल जाते रहे थे। वह एक सच्चे देशभक्त और सच्चे सत्याग्रही थे। हिन्दू–मुसलमान दंगो में उनके एक लड़के का कत्ल हो गया था। उनका सारा परिवार पाकिस्तान चला गया था, लेकिन इतना सब होने के बाद भी खानसाहबनेप्रतिज्ञाकीकि जिसपाकिस्तानकीवजहसेभाई–भाईआपस मेंलड़े,बहू–बेटियोंकीइज्जतखराब हुई,छोटे–छोटेबच्चेयतीमहुए,मैं उसजमीनपरपैरनहींरखूंगा।खानसाहबअकेलेयहींरहगए।चौ.रणबीर सिंहचाहतेथेकिइतनाबड़ाइन्सानहरियाणाकांग्रेसकापहलाप्रधानबनेतो हमारीइज्जतबढ़ेगी।

चौधरीसाहबनेखानसाहबसेयह जिम्मेदारीउठानेकीबातकही। खानसाहबबड़ीमुश्किलसेमानेऔरवहभीइसशर्तकेसाथकिवहकांग्रेस अध्यक्षहीरहेंगे,मुख्यमंत्रीहोंगेचौधरीरणबीरसिंह।

अध्यक्ष पद के नामों की घोषणा होते ही प्रतिनिधियों की खरीद–फरोख्त शुरू हो गई। चौधरी साहब के पास भी गणपतराय रासीवासिया, सरदार भूपेन्द्र सिंह जौहर व सरदार प्रहलाद सिंह आए। कलकत्तेसेगोबिन्दरामहाडा ने,जोखरक केरहनेवालेथे,अपना मुनीम भेजा।औरइनसबनेकहा किहमइसचुनावमेंआपकीहरतरहसेसहायता करना चाहते हैं। चौधरीरणबीर सिंह ने सबका धन्यवाद किया और कहा कि,''ऐसेरास्तेसेसत्ताप्राप्तकरनेसेतोअच्छाहैसत्ताकेपासहीनजाएं– धन्यवाद''।

पंजाबकेएकनेता,श्रीसतपालमित्तल,जोपंजाबमेंमंत्रीभीरहेऔर बादमेंराज्यसभाकेसदस्यबने,नेमुझेबताया कि,''सबहालातदेखनेके

बाद मैंने चौधरी रणबीर सिंह से कहा कि आप किस चक्कर में हो, आपके कुछ प्रतिनिधि दस-दस हजार रूपये में भाग रहे हैं। उन्हें रोको-बस! '' चौधरी रणबीर सिंह ने हाथ जोड़कर कहा कि, ''यह प्रस्ताव मेरे सामने मत लाओ। ''

नतीजा यह हुआ कि खान साहब दो वोटों से हार गए। चौ. रणबीर सिंह ने मुख्यमंत्री का पद खो दिया, लेकिन नैतिकता बचा ली।

समय का चक्र चला और एक दिन वह भी आया कि खान साहब चुनाव भी जीते, और मंत्री भी बने।

खान साहब सदैव चौधरी रणबीर सिंह के परिवार के सदस्य बनकर रहे। आखरी दिनों में चौधरी साहब ने उनकी खूब सेवा की। बच्चे तक सेवा में लगे रहते थे। खान साहब बड़े मजाकिया आदमी थे। भूपेन्द्र सिंह अक्सर, उनके मना करने पर भी, उनके पैर दबाते। कभी सिर या पैर ज्यादा जोर

चौधरीसाहबश्रीमतीइन्दिरागांधीतथाअब्दुलगफ्फारखाँकेसाथ

से दबा देते तो कहते, ''तुम मुझे भगाना चाहते हो?'' और जब नरमा हाथ लगते तो कहते कि ''भाई लगता है भूपेन्द्र ने आज कुछ खाया नहीं?'' इस तरह से वा होती रहती, वह मजाक करते रहते।

एक बार, खान साहब सख्त बीमार हो गए। जब उनके बचने की उम्मीद नहीं रही तो उन्होंने चौधरी रणबीर सिंह के सामने अपनी एक इच्छा जाहिर की, ''रणबीर सिंह, मेरी कुछ पैतृक जायदाद, मेरे गांव में है। वह मैं भूपेन्द्र को देना चाहता हूं। इसने मेरी बड़ी सेवा की है।''

चौ. रणबीर सिंह ने कहा, ''खान साहब आप मुझे पाप का भागी न बनाएं। हमको तो यही जायदाद बहुत है कि हमें आप जैसे व्यक्ति की सेवा करने का मौका मिला।''

चौधरी साहब ने उनके बेटे-बेटियों को पाकिस्तान से बुला लिया। मैं उस समय राज्यसभा की हाऊस कमेटी का चेयरमैन था। मैंने चौ. रणबीर सिंह के गैस्ट के तौर पर खान साहब के परिवार को एक एम.पी. का फ्लैट अलाट कर दिया। खान साहब के परिवार जन वहीं ठहरे। उनके खान पान का इंतजाम चौ. रणबीर सिंह ने किया।

एक दिन उनके परिवार वालों ने, खास कर बेटी ने, इच्छा जाहिर की कि आज तो हम अलग से खाना पका कर अपने पिता को खिलाना चाहते हैं। आप लोग भी हमारे साथ रहें। उस रोज खाना फ्लेट पर ही पका। खान साहब की बेटी ने स्वयं बनाया था। खान साहब का कई दिनों से बीमारी की वजह से खाना छुटा हुआ था, पर उस रोज उन्होंने खूब दबा के खाना खाया। जब हम लोग जाने लगे तो चौधरी साहब का हाथ पकड़ कर कहने लगे, ''रणबीर सिंह, बहुत सालों के बाद बेटी के हाथ का खाना खा असली तृप्ति हुई है।'' उनके चेहरे पर खुशी थी और बार-बार अपने बच्चों को बता रहे थे कि मैं

तुम्हारी गैर–हाजिरी में भी रणबीर सिंह के घर में ऐसे रहा जैसे अपने घर में रहता था। कुछ समय बाद खान साहब का स्वर्गवास हो गया। उनके गांव में जाकर चौधरी रणबीर सिंह ने पूरे सम्मान के साथ उनको अंतिम विदाई दी।

कुछ और उदाहरण

उनकी नैतिकता के स्तर को दर्शाने वाले कुछ और उदाहरण दूं। चौ. रामस्वरूप खिडवाली वाले चौधरी रणबीर सिंह के परिवार का राजनैतिक तौर पर हमेशा विरोधकरते रहे। चौ. मातूराम के खिलाफ चौ. रामस्वरूप के बड़े भाई चौ. टेकराम ने चुनाव लड़ा। चौ. रणबीर सिंह के बड़े भाई बलबीर सिंह के खिलाफ चौ. रामस्वरूप ने डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का चुनाव लड़ा। चौ. रामस्वरूप के छोटे भाई चौ. हरीराम ने दो चुनाव चौधरी रणबीर सिंह के खिलाफ लड़े। एक गैर–राजनैतिक बात भी हुई। चौ. हरीराम की कोठी पर सत्संग चल रहा था। वहां पता नहीं कि सने गोली चला दी। एक या दो व्यक्ति मारे गए। इस में खिड़वाली वालों ने चौधरी रणबीर सिंह के बड़े भाई डॉ. बलबीर सिंह का नाम लिखवा दिया। फलत : 302 का मुकदमा उनके खिलाफ चल पड़ा। खैर कुछ दिन बाद डॉ. बलबीर सिंह मुकदमें में बरी हो गए।

वह समय चौधरी रणबीर सिंह का सबसे कष्ट का समय था। पिता का साया सिर से उठ चुका था। भाई पर कत्ल का मुकदमा। राजनीति में भी कई प्रकार की रूकावटें। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। साईकिल पर सांघी से रोहतक आते थे और शाम को चले जाते थे। बहुत बार मैं उनके साथ होता था। कई बार चौ. हरीराम (भालौठ) साथ होते थे। चौधरी साहब उन दु:ख भरे दिनों में भी कहा करते कि दु:खों के सहने से आदमी आदमी बनता है।

समय चक्र चलता रहा। एक दिन की बात है जब कि चौधरी साहब मंत्री थे और चौ. रामस्वरूप एम. एल. ए.। चौ. रामस्वरूप के आपस में कत्ल वगैरा के बहुत झगड़े थे, अत: वह किसी के घर खाना नहीं खाते थे। जब असेम्बली का अधिवेशन होता था तो वे पांच-सात दिन की जले बियां और नमकीन अपनी आंखों के सामने रोहतक से पोहर हलवाई से बनवा कर ले आते थे। दूध भी चंडीगढ़ के नजदीक एक गांव से सैर करते हुए जाते और अपने सामने निकलवा कर लाते। वह एम. एल. ए. हॉस्टल का भी खाना नहीं खाते थे।

एक दफा उनका राशन कुछ कम हो गया। एम. एल. ए. हॉस्टल में मेरा और उनका कमरा साथ-साथ था। वह उम्र में मेरे पिता समान थे इसलिए मुझे आधे नाम से बोलते थे। कहने लगे, ''सुलतान, आज मेरा राशन खत्म हो गया।'' चौधरी रणबीर सिंह भी चूंकि उम्र में छोटे थे इसलिए उनको भी आधे नाम से बोलते थे कहने लगे कि, ''रणबीर को कहो कि आज मैं उसके घर खाना खाऊंगा''

मैंने चौ. रणबीर सिंह को टेलीफोन पर कहा कि, ''चौ. रामस्वरूप ने आपके घर खाना खाने की इच्छा जाहिर की है।'' चौधरी रणबीर सिंह को यकीन नहीं हुआ और बोले, ''भाई हमारे परिवार से इतनी दूरी है, वह तो किसी मित्र के घर भी खाना नहीं खाते। मेरे घर खाना कैसे खाएंगे?''

मैंने जवाब दिया, ''मेरे से तो यही कहा है।''

चौधरी रणबीर सिंह एम. एल. ए. हॉस्टल में आ गए। चौ. रामस्वरूप के पास गए। मैं भी साथ था। चौ. रामस्वरूप को ''भाई साहब, नमस्ते'' कहकर संबोधित किया। चौ. रामस्वरूप ने कहा, ''भाई रणबीर तेरे घर खाना खाना है।''

चौधरीरणबीरसिंहनेकहा,''चौधरीसाहब,मेरातोघरनहींहै,घरतो आपकाहीहै।''

हमतीनोंचौ.रणबीरसिंहकीगाड़ीमेंउनकीसरकारीकोठीपरचले गए।इकट्ठे खाना खाया। खाना खाने के बाद चौ. रामस्वरूप ने कहा, ''रणबीर,तुझेपताहैमैंकिसीकेघर खाना नहींखाता। फिर तेरेपास क्यों खाया?''

चौधरीसाहबनेकहा,''भाईसाहबआपकीमेहरबानीहैऔरआपने यहांखानाखाकरमुझपरएहसानकियाहै।''

चौ.रामस्वरूपनेकहा,''नाभाई,तेरेऊपरकोईएहसाननहीं।मुझे यहपताहैकिचौ.मातूरामकाखूनकिसीकोधोखानहींदेसकता।बसयही कारणथा।''

यहसुनकरचौधरीरणबीरसिंहकोइतनीखुशीहुईकिउनकीआंखो मेंपानीआगया।

उसके बाद चौ. रामस्वरूप ने आगे बात बढ़ाते हुए कहा, ''भाई रणबीर,जोहोगयासोहोगया,आजकेबादहमारेदोनोंपरिवारोंमेंकोईशक सदेंहनहींरहनाचाहिए।''

ऐसाहीहुआ।

एकऔरदिलचस्पघटनाहै।चौ.रामस्वरूपकीबेटीकीशादीथी। वहशादीबड़ेसादेतरीकेसेकरतेथे।कोईकिसीकिस्मका दिखावा नहीं करतेथे।शादीवालेदिनइत्तफाकसेपंजाबकेतत्कालीमुख्यमंत्रीसरदार प्रताप सिंह कैरों रोहतक आए हुए थे। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हॉल में कांग्रेस कार्यकताओंकीमीटिंगथी,जिसकीअध्यक्षतामेंकररहाथा।चौ.रणबीर

सिंह ने मुझसे कहा कि, ''मीटिंग जल्दी खत्म करो। चौ. रामस्वरूप की बेटी की शादी में जाना है। ''

मैंने वैसा ही किया। मीटिंग खत्म होते ही सरदार प्रताप सिंह कैरों, मैं और चौधरी रणबीर सिंह चौ. रामस्वरूप की बेटी की शादी में गए। चौ. रामस्वरूप ब्याह-शादी में कार्ड वगैरा नहीं छपवाते थे और केवल उन्हीं को बुलाते थे जिनके घर आना-जाना होता था। प्रताप सिंह कैरों ने चौ. रामस्वरूप से कहा, ''अरे चौधरी बड़ा अजीब आदमी है। बेटी की शादी है और मुझे कार्ड तक नहीं भेजा। ''

चौ. रामस्वरूप ने हंस कर कहा कि, ''सरदार साहब, जब बेटी का चाचा आपकी केबिनेट में मंत्री है तो फिर मुझे निमंत्रण देने की जरूरत क्यों पड़े? ''

इसी प्रकार की एक घटना और मुझे याद आ रही है कि पं. भगवतदयाल शर्मा ने 1962 में झज्जर से चुनाव लड़ा। चौ. रणबीर सिंह ने अपने हर रिश्तेदारों व मित्रों पर दबाव डालकर, पं. भगवतदयाल के साथ किया। पं. भगवतदयाल वह चुनाव जीत गए।

सन् 1967 में पं. भगवतदयाल ने महन्त श्रयोनाथ को चौ. रणबीर सिंह के मुकाबले में खड़ा कर दिया और चौधरी साहब डटकर चुनाव में विरोध किया। मैंने चौधरी साहब से कहा, ''यह क्या? ''

वह बोले, ''उसकी करणी उस के साथ, म्हारी करणी म्हारे साथ। देखते रहो। ''

देखा - पं. भगवतदयाल जल्दी ही असफलता को प्राप्त हुए, और चौधरी साहब फलते-फूलते रहे।

1976मेंपं.भगवतदयालजेलमेंथे।इसीदौरानउनकीबेटीकीशादी हुई।पंडितजीबेटीकीशादीमेंशामिलनहींहोसके।चौधरीरणबीरसिंहने पुरानीबातेंभूलाकरउनकीबेटीकोविदाकिया।

यहथाउनकाकर्मऔरचरित्र।

कांग्रेस के अनुशासित सिपाही

जिलाअम्बालामेंठाकुररत्नसिंहकांग्रेसकेअच्छेकर्मठकार्यकर्ताऔर नेताथे।वहचौधरीरणबीरसिंहकेबहुतअच्छेमित्रथे।जेलमेंभीसाथथे। 1946केपंजाबअसैम्बलीचुनावोंमेंठाकुररत्नसिंहकेखिलाफचौधरी रणबीरसिंहकाबहुतनजदीकीरिश्तेदारचौ.सदारामजमींदारपार्टीसे खड़ा हो गया। बहुत गहरी रिस्तेदारी होते हुए भी, वह चुनाव में ठाकुर रत्नसिंहकीमददमेंगए।

लोकसभा चुनाव (1957) में झज्जर से प्रताप सिंह दौलता, जो चौधरीसाहब के बड़े भाई के साले थे, कांग्रेस प्रत्याशी, घमण्डी लाल बन्सल के मुकाबले में लड़ रहे थे। दौलताजी कम्युनिस्ट पार्टी के टिकट पर थे। चौधरीसाहब ने अपने रिश्तेदार को छोड़कर कांग्रेस प्रत्याशी की मददकी।

कांग्रेसप्रत्याशीकेप्रचारहेतुचौधरीसाहबएकरातभालौठगांव में गए। भालौठ गांव में दौलताजी के खिलाफ जब कुछ कांग्रेसी कार्यकताओंनेघमण्डीलालबन्सलकीवोटमाँगीतोगाँवकेलोगभड़क गए।फायरहुए(लेकिनकोईहताहतनहींहुआ)।चौधरीसाहबनेबड़ी मुश्किल से लोगों को समझाया। अपना पक्ष उनके सामने रखते हुए उन्होंने कहा, ''दौलताजी मेरा तो नजदीकी रिश्तेदार है। पर रिश्तेदारी

एक बात है, राजनीति दूसरी। मैं कांग्रेस पार्टी से जुड़ा हूं। उसकी बात करूंगा। उसके प्रत्याशी घमंडीलाल को जिताने की बात करूंगा। जब रिश्तेदारी की बात होगी तो दौलता साहब को उनका उचित स्थान दूंगा। वहां घमंडीलाल के लिए कोई जगह नहीं। मैं आप लोगों को भी कहता हूं कि सब बातों को मिलाकर गुड़ मुड़ ना किया करो। कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने अपना काम किया। आप अपना काम करो। झगड़ा क्यों?''

उन्होंने अंत में कहा, ''वोट आप का पवित्र अधिकार है। उसका इस्तेमाल जैसे चाहे करो। कोई भी, और मैं भी, आप को मजबूर थोड़े ही कर रहे हैं। फिर वोट गुप्त डलता है। गुप्त रखो। मुझे क्या पता कि किसको डालोगे। इससे हमारे सम्बंधों पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा।'' गांव में शनैः शनैः तनाव कम हो गया। शांति बहाल हो गई। बहुत से लोगों ने कांग्रेसी प्रत्याशी को वोट डाले।

अच्छे लोगों की मदद

1957 में ही पंजाब विधान सभा के चुनावों में साहलावास असैम्बली से चौ. चांद राम फूलचन्द से हार गए। चौ. चांदराम हर लिहाज से एक काबिल प्रत्याशी थे। बहुत पढ़े- लिखे दलित नेता थे। चौधरी साहब कैरों साहब के पास गए। उन्होंने सरदार प्रताप सिंह कैरों से उन्हें पंजाब कौंसिल की टिकट देने की बात की। कैरों ने ऊपर जाने का इशारा किया।

चौधरी साहब पं. जवाहर लाल जी से मिलकर चांद राम जी को पंजाब कौन्सल का मैम्बर बनाने के लिए टिकट ले आए, हालांकि तब कांग्रेस पार्टी का फैसला था कि किसी भी व्यक्ति को जो विधानसभा चुनाव हार गया हो विधान परिषद् में नहीं लाया जाएगा। चौधरी रणबीर

सिंहनेइसफैसलेकोबदलवा लियाऔरइसप्रकारएकहोनहारदलित नेताकोगुमनामीमेनहींजानेदिया।बादमेंचांदरामजीकेन्द्रमेंमंत्रीरहे।

परिवार के प्रति रवैया

अक्सर राजनेताओं में यह देखने को मिलता है कि वे अपने परिवार की तरफ पूरा ध्यान नहीं देते या दे पाते। परिवार बिखर जाते हैं, बच्चे लीक से हट जाते हैं। लेकिन चौधरीसाहब इसके पूरीतरह से अपवाद थे। उन्होंने अपने परिवार पर भी, और कामों की तरह, सदैव ध्यान दिया। इस का नतीजायहरहा कि परिवारमेंअनुशासनऔरप्रेम-भावहमेशाबनारहा। आज भीहुडड्। परिवार संयुक्त परिवार हीनहीं एक आदर्श परिवार है जहांसबछोटे-बड़ेप्यारसेरहतेहैं।

अमूमन हम सुनते हैं कि बच्चे अधिक लाड़-प्यार से बिगड़ जातेहैं।यहबातभीचौधरीसाहबनेअपनेखुदकेतजुर्बेसेबेकारसिद्धकर दी। वह परिवार के हर बच्चे से अथाह लाड़-प्यार करते थे, पर न कोई बच्चा बिगड़ानकिसीनेअनुशासनकोभंगकिया।औरइसप्रकारउन्होंने दिखायाकिलाड़-प्यारसेबच्चेबनतेहैं,बिगड़तेनहीं।

एक दिलचस्पघटनाहै।यहउससमयकीहैजब कि उनकेपुत्र भूपेन्द्र सिंह (अब मुख्यमन्त्रीहरियाणा) दिल्लीमेंवकालतकीपढ़ाई करतेथे।इनकोअच्छेकपड़ेपहनने,अच्छीतरहरहनेकाशोकथा।हाथ कुछखुलाथा।मित्र-मंडलीमेंकुछखर्चहोतातोकभीदूसरोंकोपैसेनहीं देनेदेते।किस्साकोताह,वहखर्चाऔरबच्चोंसेकुछज्यादाकरदेतेथे।

भूपेन्द्रसिंह(औरदूसरेबच्चेभी)खर्चाहमेशाअपनीमाताजी से मांगते थे। एक दिन श्रीमतीहरदेईजी ने चौधरीसाहब से शिकायती लहजेमेंकहाकि,''भूपेन्द्रबहुतखर्चाकरताहै।उससेसमझाएं। ''

चौधरीसाहबनेकहा,''मैंहरबच्चेपरपूरीतरहसेनजररखता हूं।ऐसीकोईबातनहींहै।जबतकवहसहीराहपरचलताहैवहजोमांगे वह दो। बच्चें हैं, उनकी इच्छाएं हैं - जहां तक बन पड़े, पूरी होनी चाहिएं। ''

श्रीमतीहरदेईजीकुछबिगडीं,औरकहा,''हरइच्छापूरीहोनी चाहिए?यहभीकोईबातहै।कलहवाईजहाजमांगेगा-फिर? ''

चौधरी साहब हंसे और अपने चिरपरिचित अंदाज में बोले, ''हवाईजहाजमांगेगातोउसेवहभीदेनेकीकोशिशकरेंगे।नहींदेपाएतो तुम्हाराबेटाइतनालायकहैकिहमारीमजबूरीकोसमझलेगा।वहकभी बुरानहींमानेगा ''-औरहंसकरचलदिए।चौधरनदेखतीरहीं।

चौधरी साहब अपने ही नहीं, कितने ही गरीब बच्चों की पढ़ाई-परवरिशमेभीखुलेहाथसेमददकरतेथे।ऐसेअनेकउदाहरणहैं जब उन्होंने जरूरतमंद परिवारों के बच्चों को मदद की और वे अपनी पढ़ाईपूरीकरसकेतथाइनमेंसेअनेकहोनहारसाबितहुए।

गरीब बच्चों के अलावा चौधरी साहब बड़े-बूढ़े गरीबों तथा जरूरतमंदोंकीभीआर्थिक मदद करनेमेंकभीदो-बार नहींसोचतेथे। खुलेहाथसेजोकुछहोतादेदेते।कईबारखुदतंगरहते,परअपनेपिताकी तरह, दूसरों की जरूरत पूरा करते थे। वह अक्सर कहा करते थे कि, ''भाई,मैंतोसेठछाजूरामकीफिलोसफीमेंयकीनरखताहूं।सेठजीरोज

ईश्वरसेप्रार्थनकरतेथेकि,'हेभगवानइतनादेकिमेराहाथकभीकिसी केआगेनफैले,औरमेरेदरसेकोईमांगनेवालाखालीहाथनजाए।'

गरीब-पिछड़ों के मददगार

चौधरीसाहब गरीब व पिछड़ोंसे बेहद सहानुभूति रखते थे, खासकर अनुसूचितजातियोंसे।छुआछूतकोवहसबसेबड़ी-बुराईमानतेथे।वह अनुसूचित जातियों के लोगों के घर खाना खाकर विशेष आनन्द का अनुभव करते थे। दरअसल यह परिपाटी इन के पिता, चौ. मातूराम ने चलाई थी। हमारे इलाके के वह पहले आदमी थे जिन्होंने अनुसूचित जातियों के लोगों के घर जाकर खाना खाया। उन्होंने इस अभियान की शुरूआत धामड़ गाँव के एक गरीब धानक के घर खाना खाकर की थी। बादमेंयहअभियानखूबफला-फूला।

अनुसूचित जाति के लोगों ने भी चौ. मातूराम के उपकार को सदैव याद रखा। एक दिलचस्प घटना, जिसका मैं प्रत्यक्ष-दर्शी हूं, सुनिए।1962 के चुनाव हो रहे थे। मैं रोहतक जिला कांग्रेस का अध्यक्ष था। रोहतक में मैंने एक बड़ा चुनावी जलसा रखा जिस में पंजाब के तत्कालीगृहमंत्रीप.मोहनलालभीशामिलहुएथे।उससमयहमारेयहां एक बहुत बड़े व्योवृद्ध धानक सन्यासी थे - स्वामी आत्मानंद। वह स्वतंत्रतासेनानीभीथे।उनकारोहतकमेंएकआश्रमथा,जहांवहगरीब धानक बच्चोंको मुफ्त पढ़ाते थे। उन्हें भी मैंने जलसे में बुला लिया था। स्वामीजी ने कुछ अच्छे धानक युवकों के लिए कांग्रेस पार्टी से टिकटें मांगीथीं।परकिसीकोभीटिकटनहींदीगई।

मैंने पं. मोहनलाल का स्वागत स्वामीजीसे करवाया। उन्होंने पंडितजीकास्वागत कियापरजलसेकेअसलमुद्देपरकहनेलगे कि भाई मेरीअपील यह है कि चौ. रणबीर सिंह को छोड़ कर किसीभीकांग्रेसी नुमायन्दे को वोट न दो। मीटिंग में हड़कम्प मच गया। पंडित जीने कहा, 'महात्मा जी, यह क्या कह रहे हैं?' उन्होंने कहा, 'ठीक कह रहा हूं। यह आजादीकेबादतीसराचुनावहै। किसीधानककोआपने टिकटनहींदी। फिरहमआपकोवोटक्योंदें?'

पंडितजीनेपूछा, फिरआपचौ. रणबीरसिंहकोवोटदेनेके लिए क्योंकहाकहरहेहैं?'

उन्होंनेतपाक सेउत्तर दिया, 'इसलिए कि उनके पिताऔरउन केपरिवारकेहमपरउपकारहैं। मुझेवहजमानायादहैजबमुझेऔरदूसरे अछूतकहेजानेवालेलोगोंकोचौ. मातूरामअपनेचौकेमेंबैठाकरखाना खिलाते थे। हमें पलंग देते थे सोने के लिए। मैं उन के बराबर बैठता था, सम्मान पाता था। हम इस एहसान को कभी नहीं भूला सकते। अगर चौ. मातूरामकेबेटेकेलिएवोटनहींमांगूतोएहसानफरामोशकहलाऊंगा।

पं.मोहनलालभीनिरूत्तरथेऔरमैंभी।

करूणा और ममता की मूर्ति

चौधरीसाहबकीआवाज जराऊँचीथी, और बिना लाग लपेट के स्पष्ट बातकहनेकीउनकीआदतथी। इससेकईआदमीउन्हेंसमझनेमेंगलती खाजातेथेऔरउन्हेंकठोरएवंरूखासमझबैठतेथे। परजोउन्हेंजानतेथे उन्हेंउनमेंदया, करूणा, प्यारकीसाकारमूर्ति दिखतीथी। वह दूसरेके

दु:खमेंऐसेदु:खीहोजातेथेजैसेकिवहस्वयंहीदु:खीहों।वहदूसरोंपर प्यारऐसेउडेंलतेथेजैसेअपनेबेटे–पोतोंपर।श्रीमतीइन्दिरागांधीकायह पत्रदेखिए(तबनवहप्रधानमंत्रीथी,नमंत्री) रोहतकगईथीं।इन्दिराजी नेअपनेपिताजीकोवहांकेहालातलिखतेहुएकहा:

[Anand Bhawan]
Allahabad
17th February, 1957

Darling Papu,

This is just a very hurried line being written at the crack of dawn as I leave for Fatehpur. Shall not be back until midnight.

Every day's programme is like that. I am enclosing a copy of the schedule as far as it is complete.

Punjab was strenuous but most exhilarating too. I had a 100,000 people in Rohtak] just for me – imagine that ! The other meeting were good] though not as big] and *Choudhary Ranbir Singh looked after me as if he were my grandmother*!

It has suddenly become cold again – there was cold wave – and there is a chilly wind.

Much love,

Indu[*]

[*] *Two Alone, Two Together, ed. Mrs. Sonia Gandhi, p. 616.*

हरछोटे-बड़ेकेसाथउनकाइसतरहकाहीसुलूकहोताथा।मेरेछोटेबेटे वेदप्रकाशकोबड़ाप्यारकरतेथे।रोहतकआतेतोकईबारकहते,''अरे, वेदकोबुलाओ,कईदिनहुएदिखानहीं।''वहभागा-भागाजाता।मेरे बारेमेंपूछते,घरपरिवारकीकुशलताकेसमाचारलेते,औरआशीर्वाद काढेरसाराप्रसाददेकरवापिसकरते।

निष्कर्ष

चौधरीरणबीर सिंह बाहर से भी और अन्दर से भी भरे-पूरे इंसान थे। अच्छीकद-काठी,खद्दरकीउजलीपोशाक,सादाजीवन,ऊँचीसोच इनसबसेउनकेव्यक्तित्वमेंएकगजबकाआकर्षणबनगयाथा।उनमें अपनीमाटीकीसुगंध और अपने देश के प्रति प्यार का मादा इस कदर घुला-मिला था कि वह औरों से अलग दिखते थे। न उन में कमतरी का एहसासथा,नझूठाघमंड।नवह दिखावेकेकभीकायलरहे,नउन्होंने झूठ-फरेब को अपनी डिक्शनरी में कभी स्थान दिया। वह गांधी जी के सत्य,अहिंसाऔरमानव-प्रेमकेसिद्धांतोमेंअसीम विश्वासरखतेथे। 'नेकीकरदरियामेंडाल 'उनकातकियाकलामथा,जिसपरवहअमल भीकरतेथे।वस्तुत:मैंअपने60-62वर्षोंतक उनकेसाथरहनेकेतजुर्बे के आधार पर कह सकता हूं कि उनका जीवन संतो जैसा जीवन था - राजनीतिमेंरहनेकेबावजूदभी।ऐसेआदमीआजकहांमिलतेहैं?मुझे खुशी है कि प्रिय भूपेन्द्र सिंह उनकी लेगिसी को बड़े सलीके और शालीनतासेलेकरचलरहेहैं।ईश्वरउन्हेंसफलतादें!

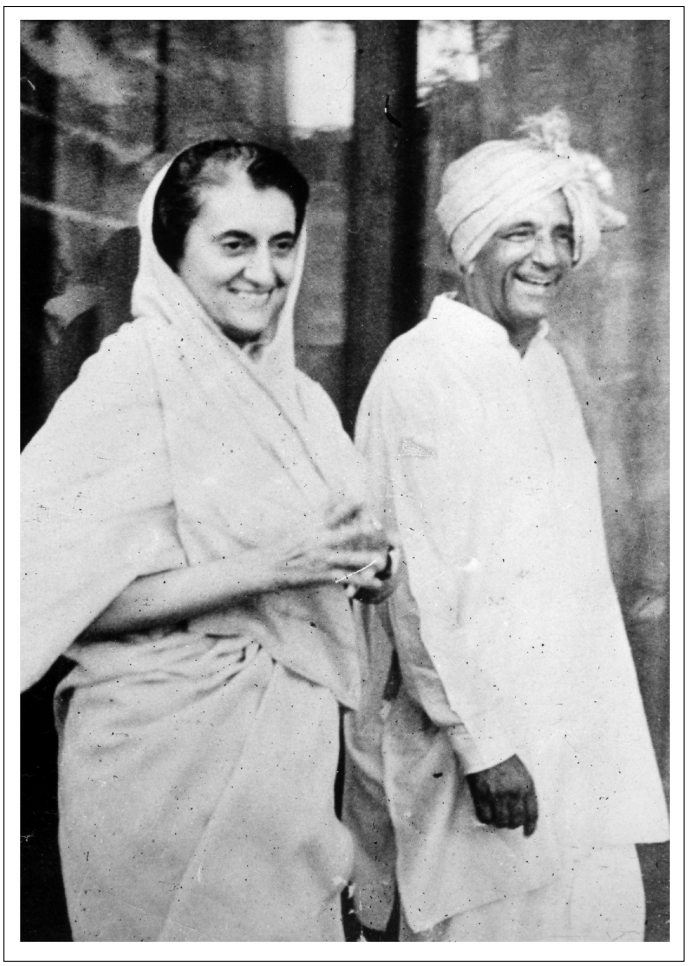

चौधरीसाहबश्रीमतीइन्दिरागांधीकेसाथ

भाग4 :परिशिष्ठ

चौ. रणबीर सिंह

कालक्रम

१९१४

26नवम्बर	...	*जन्म,ग्रामसांघी,जिलारोहतक,में (माताश्रीमतीमामकौर, पिताचौ.मातूराम)*
1920		
अप्रैल	...	*गवर्नमेंटप्राइमरीस्कूल,सांघीमेंदाखिल*
1921		
16अप्रैल	...	*गांधीजीरोहतकमें,आए,चौ.मातूरामने उनकीसभाकीअध्यक्षताकी,25000 आदमीसभामेंशामिलहुए*
1924		
... ...	...	*प्राईमरीपरीक्षापासकी*
जुलाई...	...	*गुरूकुलभैंसवालमेंआगेकीपढ़ाईके लिएदाखिला*
1928		

.....	...	गुरूकुलबीमारीकीवजहसेछोड़ा
1929		
.....	...	वैश्यहाईस्कूलरोहतकमेंदाखिलालिया
दिसम्बर	...	बड़ेभाईकेसाथलाहौरगए,कांग्रेस अधिवेशनदेखा
1933		
.....	...	मैट्रिकपरीक्षापासकी
.....	...	गवर्नमेंटकालेज,रोहतकमेंदाखिला
1935		
.....	...	एफ.एस.सी.कीपरीक्षापासकी
.....	...	रामजसकालेज,दिल्लीमेंदाखिला
1937		
.....	...	वहांसेबी.ए.कीपरीक्षापासकी
नवम्बर	...	डुमरखा(जीन्द)केचौ.हरद्वारीसिंहकी पुत्री,श्रीमतीहरदेईसेविवाह
1941		
मार्च...	...	कांग्रेसपार्टीमेंशामिल
5अप्रैल...	...	व्यक्तिगतसत्याग्रहकेअंतर्गतजेलगए,1 सालकीसजा
25मई...	...	हाईकोर्टकेहस्तेक्षपसेसकैदियोंकेसाथ रिहाहुए
जून...	...	फिरसत्याग्रहकिया,4महीनेकीसजा

24सितम्बर	...	जेलसेरिहाहुए
1942		
14जुलाई...	...	पिताजीकीमृत्यु
सितम्बर...	...	भारतछोड़ोआंदोलनमेंजेलगए,3साल कीसजा
1944		
24जुलाई...	...	नजरबंदीकीसजा
सितम्बर	...	पुन:जेलगए
1945		
14फरवरी	...	जेलसेछुटे,फिरनजरबंदकिएगए
.....	...	फिरजेलगए
दिसम्बर	...	पंजाबविधानसभाकेचुनावघोषित
12दिसम्बर	...	चुनावकेलिएजेलमेंहोनेकीवजहसे टिकटनहींदीगई
18दिसम्बर	...	जेलसेरिहाहुए
1946		
1-5फरवरी	...	पंजाबमेंचुनावहुए,गोपीचंदभार्गवने सरकारबनाई
.....	...	चौधरीसाहबसंविधानसभाकेलिएचुने गए
1947		
14फरवरी	...	संविधानसभामेंशपथली,रजिस्टरपर हस्ताक्षरकिए

15अगस्त	...	भारतस्वतंत्रहुआ
......	...	हिन्दू-मुस्लिमझगड़े,खूनखराबाको शातंकरनेमेंमददी
......	...	मेवातमेंगांधीजीकेसाथगए
14नवम्बर	...	संविधानसभामेंपहलाभाषण
1948		
30जनवरी	...	गांधीजीकीहत्या-दिल्लीगएआखरीदर्शनों केलिए
1952		
......	...	लोकसभाकेलिएचुनेगए,1957तक सदस्यरहे
1957		
......	...	पुन:लोकसभाकेलिएचुनेगए,1962 तकसदस्यरहे
1962		
......	...	पंजाबराजनीतिमेंदाखिल
......	...	पंजाबविधानसभाकेलिएचुनगए, सिंचाईमंत्रीबने
......	...	भाखड़ाबांधपूराकराया
22अक्टूबर	...	नेहरूजीनेबांधकालोकार्पणकिया
1966		
1नवम्बर	...	हरियाणाकाअलगराज्यबना
......	...	हरियाणाविधानसभाकेसदस्यवमंत्री

		बने
1967		
…..…	…	हरियाणाविधानसभाकेलिएचुनावलड़े (कलानौरसे) चुनावमेंअसफल
1968		
…..…	…	हरियाणामेंराष्ट्रपतिशासनलगा
…..…	…	पुन: कलानौर से हरियाणा विधान सभा के लिएचुनावलड़े,जीते
1972		
4अप्रैल …	…	राज्यसभाकेसदस्यबने,1978तक सदस्यरहे
…..…	…	श्रीमतीइन्दिरागांधीसदनकीनेताऔर चौधरीसाहबसदनकेउपनेताबनेरहे
…..…	…	श्रीयाजीतथाश्रीरंगाकेसाथमिलकर अखिलभारतीयस्वतंत्रतासेनानीसंगठन बनाया,श्रीमतीइन्दिरागांधीसेस्वतंत्रता सेनानियोंकी'सम्मानपेंशन'मंजूरकराई
1977		
…..…	…	हरियाणाप्रदेशकांग्रेसकेअध्यक्षबने
1978		
…..…	…	सक्रियराजनीतिसेसंन्यासलिया,जन सेवामेंपूर्णरूपसेउतरे
2009		
	…	

1फरवरी		मृत्यु,लाखोलोगोंनेअन्तिमबिदाईदी, सारेराष्ट्रनेशोकमनाया
2फरवरी	...	'संविधानस्थल 'रोहतकपरअंत्योष्टि संस्कार
11फरवरी	...	जाटकालेजरोहतकमेंश्रद्धांजलिसभा हुई,लाखोंलोगोंनेमहाननेताकोश्रृद्धा-पुष्पअर्पितकिए

पुस्तक के विषय में

यह पुस्तक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, संविधान निर्माता, उच्च कोटि के पार्लियामेंटेरियन तथा जन-प्रिय नेता चौधरी रणबीर सिंह के जीवन, कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व के कुछ ऐसे पहलुओं पर प्रकाश डालती है जो अब तक, कई कारणों से, अनदेखे या अनछुए रह गए थे। लेखक के उनके साथ 60-62 वर्षों के सम्बन्ध थे- और सम्बंध भी ऐसे जिनमें न कभी खटास पड़ी और न वे कभी टूटे या बिगड़े- बस मधुर रहे। जैसे लेखक ने चौधरी साहब को इस लम्बे अर्से में देखा-जाना वैसा ही चित्रित किया है- न कुछ घटाया है, न बढ़ाया है।

लेखक-परिचय

चौ. सुलतान सिंह (जन्म 19 सितम्बर 1923) एक कुशल और समझदार राजनेता हैं, जो अपनी मेहनत, ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठता, और लगन से इतने ऊँचे रूतबे तक पहुंचे। आप पहले पंजाब में एम.एल.सी. रहे (1958-1966), और फिर 16 वर्ष तक राज्यसभा के सदस्य रहे (1970-1986)। त्रिपुरा राज्य के राज्यपाल रहते समय (1989-1990) आपने एक सफल, आदर्श राज्यपाल की भूमिका बड़ी शालीनता से निभाई। हरियाणा में आप कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे। इसके अलावा और बहुत सारे जिम्मेदार पदों पर रहे। चौधरी रणबीर सिंह के साथ 60-62 वर्ष रहने की वजह से आप, नि:सन्देह, उन के जीवन-चरित को लिखने के पूरी तरह से अधिकारी हैं।

चौ. रणबीर सिंह : जीवन, कर्तृत्व, व्यक्तित्व

यह पुस्तक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी, संविधान निर्माता, उच्च कोटि के पार्लियामेंटेरियन तथा जन–प्रिय नेता चौधरी रणबीर सिंह के जीवन, कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व के कुछ ऐसे पहलुओं पर प्रकाश डालती है जो अब तक, कई कारणों से, अनदेखे या अनछुए रह गए थे। लेखक के उनके साथ 60–62 वर्षों के सम्बन्ध थे – और सम्बंध भी ऐसे जिन में न कभी खटास पड़ी और न वे कभी टूटे या बिगड़े – बस मधुर रहे। जैसे लेखक ने चौधरी साहब को इस लम्बे अर्से में देखा–जाना वैसा ही चित्रित किया है – न कुछ घटाया है, न बढ़ाया है।

चौ. सुलतान सिंह (जन्म 19 सितम्बर 1923) एक कुशल और समझदार राजनेता हैं, जो अपनी मेहनत, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता, और लगन से इतने उँचे रूत्बे तक पहुंचे। आप पहले पंजाब में एम. एल.सी. रहे (1958–1966), और फिर 16 वर्ष तक राज्यसभा के सदस्य रहे (1970–1986)। त्रिपुरा राज्य के राज्यपाल रहते समय (1989–1990) आपने एक सफल, आदर्श राज्यपाल की भूमिका बड़ी शालीनता से निभाई। हरियाणा में आप कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे। इसके अलावा और बहुत सारे जिम्मेदार पदों पर रहे। चौधरी रणबीर सिंह के साथ 60–62 वर्ष रहने की वजह से आप, निःसन्देह, उन के जीवन–चरित को लिखने के पूरी तरह से अधिकारी हैं।

Ch. Ranbir Singh Chair
Maharshi Dayanand University
Rohtak